वर्ष-11 अंक-68 पृष्ठ-8 मूल्यः 3 रुपये

प्रयागराज, सोमवार 19 मई 2025

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित एवं सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रसारित

Download From Google Play

Adhunik Samachar

11 YEARS ANNIVERSARY

आधुनिक समाचार नेटर्वक

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान को ऋण मिलने पर कांग्रेस का आरोप

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। कांग्रेस के महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर लिखा कि केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह अब पाकिस्तान को ऋण देने के लिए आईएमएफ की आलोचना कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मोदी सरकार नौ मई को हुई आईएमएफ कार्यकारी बोर्ड की बैठक में अमेरिकी दबाव के आगे झुक गई। पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण मिलने पर कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर बड़ा आरोप लगाया है। कांग्रेस ने कहा कि मोदी सरकार आईएमएफ कार्यकारी बोर्ड की बैठक में अमेरिकी दबाव के आगे झुक गयी। सरकार ने बैठक में पाकिस्तान को ऋण देने पर चल रही चर्चा में जोरदार विरोध नहीं किया।कांग्रेस के महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर लिखा कि केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह अब पाकिस्तान को ऋण देने के लिए आईएमएफ की आलोचना कर रहे हैं, लेकिन 29 अप्रैल को ही मोदी सरकार के जागने से पहले ही कांग्रेस ने कहा था कि आईएमएफ कार्यकारी बोर्ड इस मुद्दे पर विचार करने के लिए नौ मई को बैठक कर रहा है और भारत को इसका जोरदार विरोध करना चाहिए।

ऑपरेशन के बाद संवाद का किया गया प्रयास, जयशंकर पर राहुल के आरोप के बीच डीजीएमओ का बयान वायरल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। विदेश मंत्रालय ने भी राहुल गांधी के आरोपों को 'तथ्यों की पूरी तरह से गलत प्रस्तुति' बताया। मंत्रालय के एक्सपी डिवीजन ने कहा, 'विदेश मंत्री ने कहा था कि हमने ऑपरेशन सिंदूर के शुरू होने के प्रारंभिक चरण में पाकिस्तान को चेतावनी दी थी, न कि उससे पहले। इसे जानबूझकर गलत तरीके से पेश किया जा रहा है। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी और केंद्र सरकार के बीच जुबानी जंग तेज हो गई है। राहुल गांधी ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर पर आरोप लगाया कि भारत सरकार ने पाकिस्तान को हमले की जानकारी पहले ही दे दी थी। इस पर अब सेना की ओर से स्पष्टीकरण आया है।राहुल गांधी ने एक वीडियो शेयर किया जिसमें विदेश मंत्री जयशंकर यह कहते हुए नजर आ रहे हैं कि ऑपरेशन सिंदूर की शुरुआत में ही पाकिस्तान को चेतावनी दी गई थी। इसी बात को आधार बनाकर राहुल गांधी ने कहा, 'हमले की शुरुआत में पाकिस्तान को सूचना देना एक अपराध है। विदेश मंत्री ने खुद सार्वजनिक रूप से इसे स्वीकार किया है। किसने इसकी अनुमति दी थी? इस वजह से हमारी वायुसेना

ने कितने विमान गंवाए?सेना के डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशन्स (डीजीएमओ) लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई ने 11 मई को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में राहुल गांधी के आरोपों पर परोक्ष रूप से जवाब दिया। उन्होंने कहा, 'ऑपरेशन सिंदूर के तुरंत बाद हमने पाकिस्तान को यह बताने की कोशिश की कि हमें आतंक के केंद्र पर हमला करने की मजबूरी थी। लेकिन पाकिस्तान के डीजीएमओ ने हमारी बात को सख्ती से खारिज कर दिया और कहा कि इसका गंभीर जवाब दिया जाएगा। हम इसके लिए पूरी तरह तैयार थे।' इससे साफ होता है कि भारत ने पाकिस्तान को ऑपरेशन सिंदूर शुरू करने से पहले नहीं, बल्कि उसके तुरंत बाद संपर्क करने की कोशिश की थी। ऑपरेशन सिंदूर 7 मई को भारतीय सेना द्वारा उस आतंकवादी हमले के जवाब में शुरू किया गया था, जिसमें 22 अप्रैल को पहलगाम में 26 नागरिक मारे गए थे। ऑपरेशन के तहत भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में स्थित आतंकी ठिकानों पर हमला किया। इस कार्रवाई में 100 से अधिक आतंकवादी मारे गए, जिनमें जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिद्दीन से जुड़े लोग शामिल थे। भारत के हमलों के बाद पाकिस्तान ने सीमा पर गोलाबारी और ड्रोन हमलों की कोशिशें कीं। इसके जवाब में भारत ने 11 पाकिस्तानी एयरबेस पर एक साथ एयरस्ट्राइक कर पाकिस्तान की सैन्य क्षमताओं को भारी नुकसान पहुंचाया। 10 मई को दोनों देशों ने संघर्ष विराम पर सहमति जताई और गोलीबारी रुक गई।

फिर दुनिया के सामने झूठ परोसने की तैयारी, शहबाज ने बिलावल को सौंपी जिम्मेदारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार की ओर से दुनिया में पाकिस्तान के नापाक चेहरे को उजागर करने के लिए सात प्रतिनिधिमंडल तय किए हैं। इसकी उजागर करने का फैसला किया। इसकी नकल करते हुए पहले पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ सियालकोट की पसरूर छावनी पहुंचे और अब उन्होंने पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो हालिया

नकल कर अब पाकिस्तान ने भी बिलावल भुट्टो जरदारी को दुनिया के सामने अपने मुल्क का पक्ष रखने की जिम्मेदारी सौंपी है। आइए जानते हैं विस्तार से आतंकवाद का पनाहगार पाकिस्तान हर कदम पर, हर मोर्चे पर भारत से मात खा रहा है। पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आदमपुर एयरबेस जाकर पड़ोसी के प्रोपेगैंडा को ध्वस्त किया, फिर सरकार ने सांसदों की सात टीमों को दुनिया भर में भेजकर पाकिस्तान का नापाक चेहरा माहौल को लेकर वैश्विक स्तर पर पाकिस्तान का पक्ष रखने को कहा है।इस नकल की एलान बिलावल ने खुद किया। उन्होंने 'एक्स' पर कहा कि शहबाज शरीफ ने उनसे संपर्क किया और उनसे एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के लिए कहा। उन्होंने लिखा, 'आज सुबह प्रधानमंत्री ने मुझसे संपर्क किया। उन्होंने अनुरोध किया कि मैं अंतरराष्ट्रीय मंच पर शांति के लिए पाकिस्तान का पक्ष रखने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करूं।

साइबर अपराधियों के लिए घोस्ट सिम बनाने वाले 39 ऑपरेटरों पर एफआईआर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। सीबीआई ने बताया कि 1,930 पीओएस से जारी 64,000 से अधिक सिम कार्ड मानदंडों को पूरा करते थे, जिन्हें इन सिम कार्डों के खिलाफ कम से पीओएस ऑपरेटर गृह मंत्रालय के तहत देश की साइबर अपराध विरोधी इकाई आई4सी की जांच के दायरे में थे।सीबीआई ने बताया कि 1,930 पीओएस से जारी 64,000 से अधिक सिम कार्ड

कम 10 शिकायतों के आधार पर शॉर्टलिस्ट किया गया। इससे संदेह के दायरे में आने वाले पीओएस की संख्या घटकर 84 रह गई। आगे की जांच में पता चला कि वर्तमान में 39 पीओएस सक्रिय हैं और 'घोस्ट सिम कार्ड' बनाने में लगे हुए हैं। डिजिटल गिरफ्तारी घोटालों पर बड़ी कार्रवाई में सीबीआई ने 39 पॉइंट-ऑफ-सेल्स (पीओएस) ऑपरेटरों पर मामला दर्ज किया है। इन लोगों ने भोले-भाले लोगों को फंसाने के लिए दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से संचालित साइबर अपराधियों को 1,100 'घोस्ट सिम कार्ड' बेचे थे। मानदंडों को पूरा करते थे, जिन्हें इन सिम कार्डों के खिलाफ कम से कम 10 शिकायतों के आधार पर शॉर्टलिस्ट किया गया। इससे संदेह के दायरे में आने वाले पीओएस की संख्या घटकर 84 रह गई। आगे की जांच में पता चला कि वर्तमान में 39 पीओएस सक्रिय हैं और 'घोस्ट सिम कार्ड' बनाने में लगे हुए हैं। सीबीआई जांच में पता चला कि सिम कार्ड ई-केवाईसी के आधार पर जारी किए जाते हैं। जब कोई ग्राहक सिम लेना चाहता है, तो पॉइंट-ऑफ-सेल व्यक्ति ई-केवाईसी करवाकर सिम जारी कर देता है।

पुणे में इंद्रायणी नदी के किनारे बने 36 अवैध बंगले ध्वस्त, एनजीटी के आदेश पर नगर निगम ने की कार्रवाई

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पुणे में रिवर विला परियोजना के खिलाफ एनजीटी में कार्यकर्ता तानाजी गंभीरे ने याचिका दायर की थी। विला का निर्माण इंद्रायणी नदी की नीली बाढ़ रेखा के किनारे किया गया है, जहां विकास गतिविधियों पर प्रतिबंध है। एनजीटी ने नगर निगम को छह महीने के भीतर इन सभी 36 बंगलों को ध्वस्त करने का आदेश दिया था। पुणे में इंद्रायणी नदी के किनारे बने 36 अवैध बंगलों को नगर निगम ने ध्वस्त कर दिया। पिंपरी चिंचवाड़ नगर निगम (पीसीएमसी) के अधिकारियों ने राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (एनजीटी) के आदेश पर यह कार्रवाई की। ध्वस्तीकरण के दौरान बंगलों के मालिक मायूस नजर आए। नगर निगम कर्मचारियों ने भवनों के ध्वस्तीकरण के दौरान लोगों को हटाया। पुणे में रिवर विला परियोजना के खिलाफ एनजीटी में कार्यकर्ता तानाजी गंभीरे ने याचिका दायर की थी। उन्होंने कहा था कि विला का निर्माण इंद्रायणी नदी की नीली बाढ़ रेखा के किनारे किया गया है, जहां विकास गतिविधियों पर प्रतिबंध है। नीली रेखा 25 साल में एक बार नदी में आने वाली बाढ़

के स्तर को दर्शाती है।जुलाई 2024 में एनजीटी ने नगर निगम को छह महीने के भीतर इन सभी 36 ढांचों को ध्वस्त करने का आदेश दिया था। साथ ही बंगला मालिकों से पर्यावरण क्षति मुआवजे के तौर पर सामूहिक रूप से पांच करोड़ रुपये वसूलने का भी आदेश दिया था। इसके बाद पीसीएमसी ने प्रक्रिया शुरू की और बंगला मालिकों की सुनवाई शुरू की इस बीच, 29 बंगला मालिकों ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया, लेकिन शीर्ष अदालत ने उनकी अपील खारिज कर दी। इसके बाद भूमि और बंगला मालिकों ने एनजीटी से अपने आदेश की समीक्षा करने के लिए संपर्क किया। एनजीटी ने भी उनकी समीक्षा याचिका खारिज कर दी। एनजीटी से कोई राहत नहीं मिलने पर संपत्ति मालिकों ने फिर से सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। सर्वोच्च न्यायालय ने चार मई को अपील का निपटारा कर दिया था और आदेश दिया था कि पीसीएमसी को बंगलों को गिराने के एनजीटी के आदेश को लागू करे और पर्यावरण को हुए नुकसान के लिए 5 करोड़ रुपये वसूलने चाहिए।इसके बाद शनिवार को पिंपरी चिंचवाड़ नगर निगम (पीसीएमसी) के अधिकारी और कर्मचारी भारी पुलिस बल के साथ सुबह चिखली गांव में रिवर विला परियोजना पर पहुंचे।

केंद्र पर शरद पवार का हमला, कहा ईडी के जरिये विपक्ष को खत्म करने की कोशिश, कानून बदलने की जरूरत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। उन्होंने कहा कि संजय राउत को फंसाया गया। राउत ने केंद्र को भ्रष्टाचार के लिखित सबूत

दिए लेकिन बिना कोई कार्रवाई किए उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। तत्कालीन गृह मंत्री अनिल देशमुख को भी गिरफ्तार किया गया। लेकिन इन सभी ने कठिनाइयों के बावजूद हार नहीं मानी। सभी एक साथ रहे और एक-दूसरे को हिम्मत दी।वहीं, शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर निशाना साधते हुए कहा कि कोई तानाशाह न बने क्योंकि हिटलर भी तानाशाह था और आखिर में उसने आत्महत्या कर ली थी। तानाशाह को एक दिन जाना ही पड़ता है। उन्होंने कहा कि शिवसेना को खत्म करने का यह पहला प्रयास नहीं है। इससे पहले भी ऐसे प्रयास हो चुके हैं। वहीं, किताब का विमोचन करने वाले जावेद अख्तर ने कहा कि कई नेताओं ने जेल में रहते हुए किताबें लिखी हैं। इनमें महात्मा गांधी से लेकर पं. जवाहरलाल नेहरू आदि शामिल हैं। उन्होंने कहा कि विपक्षी नेताओं को जेल भेजने की बजाय बाहर व्यस्त रखना चाहिए क्योंकि जेल जाने पर उन्हें सोचने का मौका मिलता है और फिर वे किताब लिखते हैं।

आईपीएस अधिकारी अनुराग त्रिपुरा के डीजीपी नियुक्त, नीरव मोदी केस में सीबीआई जांच का किया था नेतृत्व

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। 1994 बैच के आईपीएस अधिकारी अनुराग को त्रिपुरा का डीजीपी नियुक्त किया गया है। उन्हें त्रिपुरा और केंद्र सरकार में काम करने का लंबा अनुभव है। अनुराग 13,000 करोड़ रुपये के पंजाब नेशनल बैंक धोखाधड़ी मामले में शामिल भगोड़े हीरा कारोबारी नीरव मोदी के खिलाफ सीबीआई जांच का नेतृत्व भी कर चुके हैं। वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी अनुराग को शनिवार को त्रिपुरा का पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) नियुक्त किया गया है। अनुराग

1994 बैच के भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) अधिकारी हैं। इससे पहले, अनुराग त्रिपुरा में पुलिस महानिदेशक (खुफिया विभाग) के पद पर कार्यरत थे। अनुराग ने 13,000 करोड़ रुपये के पंजाब नेशनल बैंक धोखाधड़ी मामले में शामिल भगोड़े हीरा कारोबारी नीरव मोदी के खिलाफ सीबीआई जांच का नेतृत्व किया था। राज्य सरकार द्वारा जारी आदेश में बताया गया है कि राज्यपाल ने संघ लोक सेवा आयोग (ळइएण्) के परामर्श से अनुराग को तत्काल प्रभाव से त्रिपुरा के डीजीपी पद पर नियुक्त किया है। अधिकारियों के अनुसार, डीजीपी बनने के बाद अनुराग ने त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा से मुलाकात की।घ्इए अधिकारी अनुराग को त्रिपुरा और केंद्र सरकार में काम करने का लंबा अनुभव है। वह सीबीआई में कई महत्वपूर्ण पदों पर भी काम कर चुके हैं। इनमें पुलिस अधीक्षक (एङ), उप महानिरीक्षक (अ्ढ), संयुक्त निदेशक और अतिरिक्त निदेशक जैसे पद शामिल हैं। अनुराग ने सीबीआई के बैंकिंग सिक्योरिटीज एंड फ्रॉड सेल (बीएस एंड एफसी) के संयुक्त निदेशक और अतिरिक्त निदेशक के रूप में प्रभारी रहते हुए नीरव मोदी से जुड़े मामले सहित कई महत्वपूर्ण मामलों की जांच की निगरानी की। 55 वर्षीय मोदी 19 मार्च, 2019 से ब्रिटेन की जेल में बंद हैं। उस पर घोटाले की कुल राशि में से 6,498.20 करोड़ रुपये की हेराफेरी करने का आरोप है। केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर रहते हुए, अनुराग ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (ण्घ्एइ) में महानिरीक्षक (कार्मिक) के रूप में भी काम किया। अनुराग ने उस्मानिया विश्वविद्यालय से पुलिस प्रबंधन में मास्टर डिग्री और हैदराबाद के र्थ्ए यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ से साइबर अपराध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा किया है। वे अमेरिका की संस्था एसोसिएशन ऑफ सर्टिफाइड फ्रॉड एग्जामिनर्स (ण्ई) से प्रमाणित धोखाधड़ी परीक्षक हैं। एक बयान के अनुसार, अनुराग को 1995 से 2003 तक त्रिपुरा में सेवा देने का बड़ा अनुभव है। वे पुलिस अधीक्षक, विशेष शाखा और सहायक महानिरीक्षक (मुख्यालय) के अलावा लोंगथराई घाटी के उप-विभागीय पुलिस अधिकारी और अविभाजित पश्चिम और दक्षिण त्रिपुरा जिलों के जिला एसपी के रूप में कार्य कर चुके हैं। 2003 से 2004 तक, उन्होंने कोसोवो में संयुक्त राष्ट्र मिशन में सेवा की। 2005 से 2013 के बीच, वे केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर थे और सीबीआई में एसपी और डीआईजी के रूप में कार्य किया। केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से लौटने पर, अनुराग ने 2013 से 2016 तक त्रिपुरा के आईजीपी (कानून और व्यवस्था) के रूप में कार्य किया।

शिरुई महोत्सव में मैतई समुदाय को धमकी, कुकी नेता पर दर्ज हुई एफआईआर मणिपुर पुलिस ने शुरू की छापेमारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। दिल्ली कुकी छात्र संगठन के प्रमुख पाओजाखुप गुइते ने वीडियो के माध्यम से मैतई समुदाय को शिरुई महोत्सव में आने की धमकी दी। मामले में पुलिस ने बताया कि वीडियो में गुइते ने कहा कि जो भी मैतई शिरुई महोत्सव में आए, उसे जिंदा वापस नहीं जाने देना चाहिए।बता दें कि कुकी

पर जान से मारने की धमकी दी। जिसके बाद मणिपुर पुलिस ने छात्र नेता पर एफआईआर दर्ज कर देशभर में छापेमारी शुरू कर दी है। मणिपुर पुलिस ने दिल्ली कुकी स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन (केएसओ) के अध्यक्ष पाओजाखुप गुइते के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। उन पर आरोप है कि उन्होंने एक वीडियो में मैतई समुदाय के लोगों को उखरूल जिले में होने वाले शिरुई लिली महोत्सव में शामिल न होने स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन (केएसओ) के अध्यक्ष पाओजाखुप गुइते का यह वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ, जिसके बाद चुराचांदपुर पुलिस ने एफआईआर दर्ज की और उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी शुरू कर दी है।मणिपुर के साथ-साथ मिजोरम, असम, नागालैंड और मेघालय की पुलिस को भी अलर्ट किया गया है ताकि गुइते को जल्द से जल्द पकड़ा जा सके। पुलिस ने कहा कि 20 से 24 मई तक होने वाले शिरुई महोत्सव के दौरान लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष इंतजाम किए जा रहे हैं।केएसओ) के अध्यक्ष पाओजाखुप गुइते की टिप्पणी पर अलग-अलग संगठनों ने प्रतिक्रिया दी है। जहां एक तरफ मीतेई हेरिटेज सोसाइटी ने इसे खतरनाक और भड़काऊ बताया और गुइते को आदतन अपराधी करार दिया। साथ ही इंडिजिनस पीपल्स फोरम मणिपुर के अध्यक्ष अशांग कसार ने राष्ट्रपति शासन के बावजूद ऐसी घटनाओं पर सवाल उठाया। वहीं दूसरी ओर कुकी ऑर्गनाइजेशन फॉर ह्यूमन राइट्स (केओएचयूआर) ने एफआईआर की निंदा की। साथ ही कहा कि कुकी समुदाय को भेदभावपूर्ण तरीके से टारगेट किया जा रहा है।गौरतलब है कि मणिपुर में मई 2023 से मीतई और कुकी-जो समुदायों के बीच हिंसक संघर्ष चल रहा है, जिसमें अब तक 260 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है और हजारों लोग बेघर हो गए हैं। बढ़ते हिंसा के स्वरूप को देखते हुए राज्य में बीते 13 फरवरी 2025 से राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया है।

महाप्रसाद को डाइनिंग टेबल पर खाने से बचें

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पुरी के जगन्नाथ मंदिर प्रशासन ने श्रद्धालुओं से भगवान जगन्नाथ के महाप्रसाद को डाइनिंग टेबल पर बैठकर ना खाने की अपील की है। मंदिर प्रशासन की तरफ से ये अपील सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो के बाद की गई, जिसमें कुछ लोग होटल में टेबल पर बैठकर और जूते पहनकर महाप्रसाद खाते नजर आए। पुरी के जगन्नाथ मंदिर प्रशासन (एसजेटीए) ने शनिवार को श्रद्धालुओं से एक अहम अपील की है। इसके तहत मंदिर प्रशासन ने श्रद्धालुओं से कहा कि वे भगवान जगन्नाथ के पवित्र महाप्रसाद को पूरी श्रद्धा और परंपरा के साथ ग्रहण करें और इसे डाइनिंग टेबल पर बैठकर खाने से बचें।बता दें कि एसजेटीए की यह अपील सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो के बाद की गई, जिसमें कुछ लोग होटल में टेबल पर बैठकर और जूते पहनकर महाप्रसाद खाते नजर आ रहे हैं।

कर्नाटक उच्च न्यायालय में हुई मॉक ड्रिल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। मॉक ड्रिल के दौरान बम विस्फोट के हालात से निपटने की ट्रेनिंग हुई, जिसमें आपात स्थिति में राहत और बचाव कार्य करने और लोगों को प्रभावित स्थल से सुरक्षित निकालने पर फोकस किया गया। मॉक ड्रिल में आम जनता और उच्च न्यायालय के स्टाफ ने भी सहयोग किया।आपात स्थिति से निपटने के लिए कर्नाटक में ऑपरेशन अभ्यास के तहत मॉक ड्रिल का आयोजन किया जा रहा है। इसी के तहत शनिवार को कर्नाटक उच्च न्यायालय की कलबुर्गी पीठ में मॉक ड्रिल की गई।

बीएसएफ को मिली बड़ी सफलता, 1.11 करोड़ के सोने के बिस्किट समेत दो तस्कर गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। बीएसएफ ने पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना में भारत-बांग्लादेश सीमा पर 1.167 किलोग्राम सोने की तस्करी नाकाम की। बीएसएफ ने 10 बिस्कुटों के साथ दो तस्कर गिरफ्तार हुए। अधिकारी ने बताया कि जब्त किए गए सोने की कीमत 1.11 करोड़ रुपए है। भारत-बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय सीमा पर बीएसएफ को बड़ी सफलता मिली है। पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले में भारत-बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय सीमा पर स्थित बीएसएफ दक्षिण बंगाल सीमांत की 143वीं वाहिनी की सीमाचौकी

हाकिमपुर पर खुफिया सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए सोने की तस्करी की कोशिश को नाकाम कर दिया। इस कार्रवाई में बीएसएफ ने दो तस्करों को दस सोने के बिस्कुटों के साथ रंगेहाथ गिरफ्तार किया, जो बांग्लादेश से भारत में सोना तस्करी की कोशिश कर रहे थे। जब्त किए गए सोने का कुल वज़न 1.167 किलोग्राम और अनुमानित कीमत 1 करोड़ 11लाख रूपए है। बीएसएफ दक्षिण बंगाल सीमांत के जनसंपर्क अधिकारी के मुताबिक यह कार्रवाई शुक्रवार को उस समय की गई जब हाकिमपुर सीमाचौकी पर तैनात जवानों को सोने की तस्करी से जुड़ी एक पुख्ता जानकारी मिली। सुबह करीब 10.30 बजे, हाकिमपुर उत्तरपाड़ा गांव के पास दो संदिग्ध व्यक्तियों को देखने के बाद उनसे पूछताछ की गई और गहन तलाशी ली गई।

उप्र प्राथमिक शिक्षक संघ ब्लाक इकाई चाका का गठन संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षक संघ ब्लाक इकाई चाका का निर्विरोध निर्वाचन जिला कार्यालय सिविल लाइंस में संपन्न हुआ। जिला अध्यक्ष शंकर चंद्र व जिला मंत्री आरती जायसवाल के दिशा निर्देश में निर्वाचन कार्य संपन्न हुआ। जिसमें पम्मी गुप्ता अध्यक्ष, सुनीता दुबे मंत्री, अनुजा सिंह कोषाध्यक्ष, ममता यादव वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कृष्णा गुप्ता संयुक्त मंत्री निर्वाचित की गई।जिला मंत्री आरती जायसवाल ने सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को माल्यार्पण कर उन्हें बधाई दिया।जिला अध्यक्ष शंकर चंद्र ने नव निर्वाचित पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि प्रदेश अध्यक्ष सुशील कुमार पांडेय जी के निर्देशानुसार ब्लाक इकाईयों का गठन किया जा रहा है।इसी कड़ी में विकास खंड चाका में भी प्राथमिक शिक्षक संघ की ब्लाक इकाई का गठन किया गया है।उन्होंने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए उनसे शिक्षक हितों के लिए हमेशा समर्पित रहने का आह्वान किया।इस अवसर पर संघ के वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष अब्दुल कुद्दूस खान, जिला कोषाध्यक्ष विजय लक्ष्मी,जिला संगठन मंत्री मनोज कुमार पांडेय, सुनील गुप्ता,चंदन यादव,मनोज शुक्ला, प्रमोद कुमार मिश्र,गीरीश चंद्र सिंह, जितेन्द्र मिश्र, सतीश कुशवाहा, लक्ष्मी नारायण पाण्डेय, संतोष विश्वकर्मा, अपर्णा योगेश्वर,रेखा देवी सहित अनेक शिक्षक और शिक्षिका उपस्थित रहे।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता: गोरखपुर में सैनिकों का सम्मान, एक साथ निकली भव्य शौर्य तिरंगा यात्रा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

लखनऊ। यात्रा में शामिल केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री कमलेश पासवान ने कहा कि तिरंगे के सम्मान और राष्ट्रभक्ति की प्रबल भावना से ओतप्रोत यह जनसैलाब देश की एकता, अखंडता और आत्मगौरव का जीवंत प्रतीक बनकर उभरा है। ऑपरेशन सिंदूर की ऐतिहासिक सफलता और सेना के अद्वितीय शौर्य को नमन करते हुए विभिन्न सामाजिक संगठनों व भूतपूर्व सैनिकों ने शौर्य तिरंगा यात्रा निकाली। यह यात्रा विश्वविद्यालय गेट से होते हुए पैडलेगंज चौक पर सुभाष चंद बोस की प्रतिमा के पास समाप्त हुई। यात्रा में शामिल केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री कमलेश पासवान ने कहा कि तिरंगे के सम्मान और राष्ट्रभक्ति की प्रबल भावना से ओतप्रोत यह जनसैलाब देश की एकता, अखंडता और आत्मगौरव का जीवंत प्रतीक बनकर उभरा है। ऑपरेशन सिंदूर इस बात को स्पष्ट करता है कि देश की सरकार व सेना आतंकिस्तानियों व उनके आकाओं को नेस्तनाबूद करने के लिए आगे बढ़ चली है।इस यात्रा में भाजपा जिलाध्यक्ष जनार्दन तिवारी, युधिष्ठिर सिंह, विधायक गण फतेह बहादुर सिंह, प्रदीप शुक्ला, महेन्द्रपाल सिंह, डॉ. विमलेश पासवान, कैप्टन ओमप्रकाश मिश्र, जीके मिश्र, मनोज सिंह, रमेश सिंह, सबल सिंह पालीवाल, ब्लॉक प्रमुख सुमन यादव, दिलीप कुमार यादव, संजू सिंह, चंचला शुक्ला व अन्य बहुत से लोग शामिल रहे।

अपराध निरोधक समिति द्वारा आयोजित सम्मान समारोह कार्यक्रम सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। अपराध निरोधक समिति द्वारा आयोजित सम्मान समारोह कार्यक्रम में माननीय न्यायमूर्ति श्री विपिन चन्द्र दीक्षित उच्च न्यायालय द्वारा 19/04/2025 को लल्लू जी टेंट कंपनी परेड थाना दारागंज में घटित भीषण अग्निकांड को अल्प समय में अग्नि शमन एवम आपात सेवा कमिश्नरेट प्रयागराज द्वारा नियंत्रित किए जाने और 25 व्यक्तियों के जीवन को सुरक्षित बचाने हेतु सीएफओ डॉ0राजीव कुमार पाण्डेय और जनपद के 20अधिकारियों/ कर्मचारियों को प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

डॉ आकांक्षा पाल को मिला कैलाश गौतम सम्मान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। प्रयागराज में सामाजिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में सदैव सक्रिय रहने वाली संस्था गुफ्तगू द्वारा एक बार फिर देश भर के विभिन्न प्रांतो के सामाजिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को रविवार दोपहर आर्य कन्या डिग्री कॉलेज सभागार में सम्मानित कर उनका सम्मान बढ़ाया गया। जिस क्रम में चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय की अतिथि प्रवक्ता तथा 35 से अधिक रिसर्च पेपर प्रकाशित कर प्रयागराज का गौरव बढ़ाने वाली साहित्यिक एवं संगीत की शादी का डॉक्टर आकांक्षा पाल को कैलाश गौतम अवार्ड से सम्मानित किया गया देश के चार रचनाकारों को यह सम्मान मिला जिसमें प्रयागराज की डॉक्टर आकांक्षा पाल को विशिष्ट सेवा के लिए यह सम्मान संस्था द्वारा दिया गया। डीआर आकांक्षा पाल संगीत एवं साहित्य की कई पुस्तकों की लेखिका के रूप में देश एबीपी न्यूज़ विश्वविद्यालय की पुस्तकालय में अपनी माहिती भूमिका निभाती है तथा प्रयागराज के विभिन्न साहित्य एवं सामाजिक संस्थाओं में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां के साथ सामाजिक सेवा में भी अग्रणी रहती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में मशहूर बॉलीवुड अभिनेता तथा टेलीविजन के चर्चित धारावाहिक चंद्रकांता में पंडित जगन्नाथ एवं शक्तिमान सर्वाधिक सीरियल करने वाले लिम्का लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर श्री राजेंद्र गुप्ता जी मौजूद रहे कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय न्यायमूर्ति श्री क्षितिज शैलेंद्र जी ने की। डॉ आकांक्षा पाल की उपलब्धि के लिए यमुना पार कलाकार संघ के अध्यक्ष एवं उनके विशिष्ट सहयोगी प्रियांशु श्रीवास्तव ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए बधाई दी।

शादी का वादा करके भूल गई अब जीना नहीं चाहता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

लखनऊ। कमरे और शव की तलाशी में अंग्रेजी में लिखा सुसाइड नोट मिला है। इसमें आगाज ने मोहल्ले की ही विवाहिता का नाम लिखकर बेवफाई का आरोप लगाया है। उसने लिखा कि युवती ने उससे शादी का वादा किया था, लेकिन वह उसे भूल गई है। इसलिए अब वह जीना नहीं चाहता है। वह अपनी जान दे रहा है। बरेली के प्रेमनगर थाना क्षेत्र के बानखाना निवासी बेकरी संचालक 28 वर्षीय आगाज ने जंक्शन के पास अपने दोस्त के होटल सिटी ग्रांड में आत्महत्या कर ली। फंदा खुलने से उसका शव बेड पर गिर गया। शनिवार को होटल स्टाफ ने शव देखा तो मालिक को सूचना दी। होटल मालिक जीशान की सूचना पर कोतवाल अमित पांडेय पहुंचे तो शव बेड पर पड़ा मिला। पुलिस ने शव निकलवाकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। कमरे और शव की तलाशी में अंग्रेजी में लिखा सुसाइड नोट मिला है। इसमें आगाज ने मोहल्ले की ही विवाहिता का नाम लिखकर बेवफाई का आरोप लगाया है। उसने लिखा कि युवती ने उससे शादी का वादा किया था, लेकिन वह उसे भूल गई है। इसलिए अब वह जीना नहीं चाहता है। वह अपनी जान दे रहा है। मृतक के दोस्त जीशान ने बताया कि आगाज उनका दोस्त था और बेकरी चलाता था। वह कभी-कभार उनके होटल में आराम करने आ जाता था। शनिवार रात जब वह होटल आए तो देखा नीचे आगाज की स्कूटी खड़ी थी। वह ऊपर गए तो सभी कमरे खाली थे।

कार्यक्रम निशुल्क सात दिवसीय का शुभारंभ हुआ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। अत्यंत हर्ष के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि यमुना पार की लोक कलाओं के पुनर्जागरण के प्रयास हेतु उत्तर प्रदेश संस्कृति विभाग के तत्वाधान में उत्तर प्रदेश लोक जनजाति संस्थान के निर्देशन में श्रीमती श्वेता श्रीवास्तव के संयोजन में कल एसएस कान्वेंट इंटर कॉलेज त्रिवेणी नगर नैनी में ढोलक वादन की निशुल्क सात दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ होना सुनिश्चित हुआ है जिसका शुभारंभ निदेशक ,उत्तर प्रदेश संस्कृति विभाग लोक जनजाति संस्थान श्री अतुल द्विवेदी जी के कर कमलों से होगा इस सामाजिक लोक कल्याण हित कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

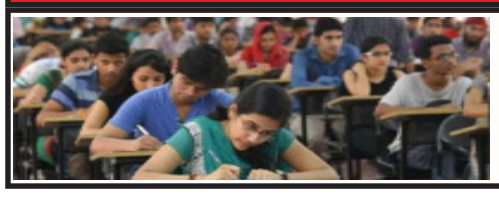

प्रदेश आस/पास

भारत

मंडलायुक्त ने कम्पोजिट विद्यालय पाराकलाँ में एमडीएम शेड का किया उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

रायबरेली। मंडलायुक्त लखनऊ डॉ0 रोशन जैकब ने वि0ख0 महाराजगंज स्थित कंपोजिट विद्यालय पाराकलाँ में मनरेगा द्वारा निर्मित एमडीएम शेड का उद्घाटन किया। इस शेड के बन जाने से विद्यालय के बच्चों को साफ सुथरा और व्यवस्थित मिड डे मील प्राप्त हो सकेगा, साथ ही विद्यालय की गुणवत्ता में सुधार होगा।प्राइमरी स्कूल में मिड डे मील किचन शेड का निर्माण होने से पर्याप्त भंडारण, तैयारी और खाना पकाने के क्षेत्र और एकीकृत वाश सुविधाओं के साथ मॉडल एमडीएम किचन शेड छात्रों को सुरक्षित और स्वच्छ भोजन सुनिश्चित कराएगा।

मंडलायुक्त लखनऊ ने जिलाधिकारी हर्षिता माथुर के साथ विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को पठन-पाठन सामग्री भी वितरित की। जिसमें पेंसिल बॉक्स, शिक्षा पर प्रेरक कहानी की पुस्तके, चार्ट आदि शामिल है। उन्होंने विद्यालय में स्मार्ट क्लास की सुविधाओं की भी जानकारी ली। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अर्पित उपाध्याय, उपजिलाधिकारी महराजगंज सचिन यादव, डीसी मनरेगा रवि शंकर पांडेय, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी शिवेंद्र सिंह, खंड विकास अधिकारी वर्षा सिंह, ग्राम प्रधान गीता सहित विद्यालय के कार्मिक उपस्थित रहे।मंडलायुक्त ने ग्राम पंचायत पोखरनी में स्थित अमृत सरोवर का किया अवलोकन

मंडलायुक्त, लखनऊ डॉ0 रोशन जैकब ने ग्राम पंचायत पोखरनी में नवनिर्मित अमृतसर सरोवर का अवलोकन भी किया। उन्होंने यहां पर कार्य की गुणवत्ता को देखते हुए निर्देश दिया कि मानसून आने से पहले ही सरोवर में जलभराव कर लिया जाए। उन्होंने अमृत सरोवर परिसर में जिलाधिकारी के साथ वृक्षारोपण भी किया।

तहसील महाराजगंज में मंडलायुक्त डॉ0 रोशन जैकब ने सुनीं लोगों की समस्याएं,शीघ्र निस्तारण का दिया निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

रायबरेली। मंडलायुक्त लखनऊ डॉ0 रोशन जैकब ने जिलाधिकारी हर्षिता माथुर के साथ संपूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर तहसील महाराजगंज में लोगों की समस्याएं सुनी। उनके सामने सर्वाधिक राजस्व और विद्युत विभाग के साथ चकबंदी, पारिवारिक झगड़े, स्वास्थ्य, ग्राम पंचायत, पेंशन आदि से संबंधित शिकायतें आयीं। उन्होंने चकबंदी की शिकायत पर जिलाधिकारी हर्षिता माथुर को निर्देश दिया कि मामले की जांच कमेटी बनाकर कराई जाए और लापरवाही पाए जाने पर संबंधित पर विभागीय कार्यवाही सुनिश्चित कराई जाए। अधिशासी अभियंता विद्युत महाराजगंज की शिकायत ग्रामीणो और पत्रकारों ने की। पत्रकारों ने मंडलायुक्त को बताया कि बिजली विभाग के अधिकारी फोन करने पर फोन रिसीव नहीं करते हैं। यदि किसी प्रकार की खबर लिखी जाती है तो उनके द्वारा द्वेषपूर्ण रवैया अपनाते हुए बिजली का कनेक्शन काटने की धमकी दी जाती है। इस पर डॉ जैकब ने मामले की जांच कराने के निर्देश दिए। बछरावां के जमीन विवाद के एक प्रकरण में खतौनी में नाम गलत चढ़ जाने उन्होंने जांच करते हुए सम्बन्धित के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि विभागीय अधिकारी समाधान दिवस की समाप्ति पर अपने-अपने प्रकरणों की जांच करने क्षेत्र में जाएंगे और संभव हो तो आज ही मामले का निस्तारण करेंगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा कि थाना दिवस के अवसर पर आने वाली शिकायतों को पहले से ही आपसी विचार विमर्श, सुलह समझौता और आवश्यक कार्यवाही करते हुए थाना दिवस में निस्तारित कराया जाए। आज के आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में राजस्व विभाग के 46, पुलिस के 13, विकास के 10 एवं अन्य 16 कुल 85 प्रकरण प्राप्त हुये, जिसमें से 10 प्रकरणों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। शेष प्रकरणों को निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को इस निर्देश के साथ उपलब्ध करा दिये गये कि उनका निस्तारण एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित कराए।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अर्पित उपाध्याय, अपर जिलाधिकारी प्रशासन सिद्धार्थ, अपर पुलिस अधीक्षक संजीव कुमार सिन्हा, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 नवीन चंद्रा, एसडीएम महराजगंज सचिन यादव, तहसीलदार महराजगंज मंजुला मिश्रा, खण्ड विकास अधिकारी महराजगंज वर्षा सिंह सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

स्कूल की गाड़ी का फिटनेस एक साल के भीतर कराया है

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

गोरखपुर। बिहार से दिल्ली जा रही एसी स्लीपर बस में दो दिन पूर्व लखनऊ के किसान पथ पर आग लग गई थी। प्रारंभिक जांच से पता चला कि आठ अप्रैल 2024 को एनीव्हेयर फिटनेस प्रणाली के तहत बस को देखे बिना ही फोटो के आधार पर ही गोरखपुर के तत्कालीन आरआई राघव कुशवाहा ने फिटनेस प्रमाणपत्र जारी कर दिया था। एआईएस-119 मानकों के अनुरूप न तो सीट का लेआउट था, न ही आपात निकास द्वार। गंभीर लापरवाही और नियमों की अवहेलना के आधार पर राघव कुमार कुशवाहा को निलंबित किया गया। राघव कुशवाही की तैनाती वर्तमान में बरेली में है राघव के खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू की गई है। इस घटना के बाद परिवहन विभाग स्लीपर बसों के फिटनेस को लेकर सख्त हो गया है। विभाग ने पिछले एक साल में हुए सभी यात्री वाहनों के फिटनेस के जांच के निर्देश दिए हैं। लखनऊ में जिस स्लीपर बस में आग लगी थी, उसका फिटनेस गोरखपुर में हुआ था। इस मामले में तत्कालीन आरआई राघव कुशवाहा को विभाग ने निलंबित कर दिया है।

लखनऊ के किसान पथ पर आग लग गई थी। प्रारंभिक जांच से पता चला कि आठ अप्रैल 2024 को एनीव्हेयर फिटनेस प्रणाली के तहत बस को देखे बिना ही फोटो के आधार पर ही गोरखपुर के तत्कालीन आरआई राघव कुशवाहा ने फिटनेस प्रमाणपत्र जारी कर दिया था। एआईएस-119 मानकों के अनुरूप न तो सीट का लेआउट था, न ही आपात निकास द्वार। गंभीर लापरवाही और नियमों की अवहेलना के आधार पर राघव कुमार कुशवाहा को निलंबित किया गया। राघव कुशवाही की तैनाती वर्तमान में बरेली में है राघव के खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू की गई है। इस घटना के बाद परिवहन विभाग स्लीपर बसों के फिटनेस को लेकर सख्त हो गया है। विभाग ने पिछले एक साल में हुए सभी यात्री वाहनों के फिटनेस के जांच के निर्देश दिए हैं। लखनऊ में जिस स्लीपर बस में आग लगी थी, उसका फिटनेस गोरखपुर में हुआ था। इस मामले में तत्कालीन आरआई राघव कुशवाहा को विभाग ने निलंबित कर दिया है।

पाकिस्तान-तुर्किए की यारी, पूरी दुनिया से गद्दारी, काशी में दोनों देशों की निकाली गई शवयात्रा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। बनारस में पाकिस्तान और तुर्की देश की शवयात्रा निकाली गई। यात्रा में शामिल लोगों ने तुर्की के हमले को लेकर अपनी कड़ी नाराजगी जताई। कहा कि हर मुसीबत ने भारत ने इस देश का साथ दिया लेकिन यह एहसान फरामोश निकला जब तुर्किये में भूकंप आया था तब भारत ने उसके नागरिकों की जान बचाने के लिए राशन भेजा, दवा भेजी।द उसके बदले तुर्किये ने भारत के नागरिकों की हत्या करने के लिए घातक ड्रोन भेजे। पाकिस्तानी आतंकवादियों के साथ खुलकर खड़ा हो गया। वर्ष 1192 में तुर्कों ने भारत पर हमला किया, भारत को गुलाम बनाया। वर्षों तक भारत के लोगों के साथ नस्लीय भेदभाव करते रहे। खुद सुल्तान बलबन ने कहा था कि जब मैं किसी तुच्छ मुसलमान को देखता हूं तो मेरी नाड़ी क्रोध से उत्तेजित हो जाती है। पाकिस्तान के साथ जब जंग शुरू हुई, तो तुर्किये पाकिस्तान के साथ खड़ा हो गया। ऐसे में भारत के लोगों ने पाकिस्तान और तुर्किये का पूर्ण बहिष्कार करने का स्वतः फैसला लिया है। यह नागरिक चार्टर है, नागरिकों का निर्णय।विशाल भारत संस्थान ने लमही के नेताजी सुभाष मंदिर से तुर्किए और पाकिस्तान की शव यात्रा निकाली गई। बड़ी संख्या जुटे मुस्लिमों ने पाकिस्तान और तुर्किये मुर्दाबाद के नारे लगाए। शव लेकर चल रहे अफरोज पाण्डेय, अफसर बाबा, नौशाद दूबे, शहाबुद्दीन तिवारी, लियाकत अली ने कहा कि आतंकवादियों का साथ देने वाले देश की आत्मा मर चुकी है, इसलिए इनकी शव यात्रा निकाली जा रही है।शव यात्रा में सबसे आगे मुस्लिम धर्म गुरु अफसर बाबा हड़िया लेकर चल रहे थे, वो पाकिस्तान के अंतिम संस्कार के लिए शव यात्रा में शामिल थे, वहीं शहाबुद्दीन उर्फ जोसेफ तिवारी तुर्किये के अंतिम संस्कार के लिए हड़िया लेकर चल रहे थे इस अवसर पर विशाल भारत संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 राजीव श्रीगुरुजी ने कहा कि जिस तुर्की के लोगों के जीवन को बचाने के लिए भारत ने दवा और अनाज भेजा, वही तुर्की पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत को तबाह करना चाहता है। ऐसे तुर्की से किसी तरह का कोई रिश्ता नहीं रखना चाहते। पाकिस्तान और तुर्की दोनों आतंकियों के मददगार है। इनका पूर्ण बहिष्कार होना चाहिए। अब नागरिकों ने पूर्ण बहिष्कार का फैसला किया है। जौनपुर के जिला चेयरमैन नौशाद अहमद दूबे ने कहा कि तुर्की हमेशा से धोखेबाज हैं। इनकी फितरत है धोखा देना। पाकिस्तान और तुर्की से किसी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं रखना है।डॉ. अर्चना भारतवंशी, डॉ. नजमा परवीन, डॉ. मृदुला जायसवाल, अब्दुर्रहमान, अशद, लियाकत, रईस, अफ़रोज अहमद, समीर खान, समीर उल्लाह खान, जमील खान, नसीम खान, मुहम्मद शहाबुद्दीन, अफसर बाबा, नफीस, मो. इस्लाम, मो. आसिफ, सौरभ पाण्डेय, सत्यम राय, अमित राजभर, मो. फिरोज, कलीमुद्दीन, पूनम, अनीता, मैना, सुनीता, सरोज, गीता, रमता, मयंक श्रीवास्तव, मो. रेहान, इली, खुशी, उजाला, दक्षिता आदि।

जातिसूचक गाली दी, आंगन में पोछा लगाते देख कहा- मेरा घर अपवित्र हो गया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। यह मामला यूपी के सोनभद्र का है। आरोप है कि घोरावल में तैनात सीओ ने अपने यहां एक चौकीदार के साथ मारपीट की। उसे जातिसूचक गालियां दी। कहा कि तुम्हारे प्रवेश करने से मेरा घर अपवित्र हो गया।सोनभद्र के घोरावल में तैनात सीओ राहुल पांडेय पर चौकीदार ने पिटाई का आरोप लगाया है। उच्चाधिकारी को प्रेषित पत्र में कहा है कि आवास में काम करने के दौरान सीओ ने जातिसूचक शब्दों से अपमानित किया और पिटाई की। एसपी ने मामले को गंभीरता से लेते हुए एएसपी को जांच सौंपी है। फिलहाल अधिकारी मसले पर कुछ भी बोलने से कतरा रहे हैं। शिकायत पत्र में करमा थाना क्षेत्र के दुधियां गांव निवासी ग्राम चौकीदार बाला प्रकाश ने बताया कि छह मई की शाम उसकी ड्यूटी घोरावल सीओ राहुल पांडेय के आवास पर लगाई गई थी। आरोप है कि सात मई की सुबह वह ड्यूटी पर था, तभी सीओ की पत्नी के कहने पर घर आंगन की सफाई करने लगा।

सोते हुए किशोर को कोबरा ने दो बार डंसा, बिस्तर से उठकर इधर-उधर देखा, लड़खड़ाया और मौत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

लखनऊ। 17 साल का मनोज छपरौली के लूंब गांव में एक होटल पर रसोइये का काम करता था। रात को होटल में ही सो रहा था, तभी एक कोबरा कमरे में आ गया और मनोज को डस लिया। होटल में लगे सीसीटीवी कैमरे में घटना कैद हो गई है। छपरौली के लूंब गांव में शुक्रवार रात होटल में सो रहे रसोइया मनोज (17) को कोबरा सांप ने दो बार डस लिया। उसे चिकित्सक के यहां ले जाया गया, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। कोबरा सांप के डसने की पूरी घटना होटल में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। रसोइया की मौत के बाद ग्रामीणों ने सांप को पकड़वा दिया।लूंब गांव निवासी कमलेश का छोटा बेटा मनोज गांव के ही एक होटल पर रसोइया था, जो रात में होटल में ही सो जाता था। शुक्रवार रात मनोज होटल में सो रहा था। रात करीब साढ़े तीन बजे एक सांप होटल के कमरे में आ गया। उसने मनोज के हाथ में डस लिया। मनोज उठा और आसपास देख लगा। कुछ दिखाई नहीं दिया तो वह सो गया। इसके बाद भी कोबरा सांप वहीं पर घूमता रहा और दोबारा मनोज के पेट पर डस लिया। इससे मनोज नींद से जाग गया और जैसे ही वह उठा तो बिस्तर पर सांप दिखाई दिया। उसने बाहर निकलकर होटल के मालिक को फोन कर घटना की सूचना दी। होटल मालिक गाड़ी लेकर आया और मनोज को किरठल गांव के एक चिकित्सक के यहां ले गया। वहां पर चिकित्सक ने उपचार शुरू किया, तभी मनोज की हालत बिगड़ने लगी और थोड़ी देर बाद ही उसकी मौत हो गई। मनोज दो भाइयों में छोटा था, उसका बड़ा भाई अनुज मजदूरी करता है। उनके पिता की करीब 15 साल पहले मौत हो गई थी। ग्राम प्रधान बहादुर सिंह ने बताया कि मनोज काफी मेहनती था, उसके परिवार को आर्थिक मदद दिलाई जाए।

अब अखिलेश की एंट्री, लिखा आपमें कभी ऐसा विचलन न था

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

लखनऊ। डीएनए को लेकर सपा और ब्रजेश पाठक के बीच जारी जुबानी जंग में अब सपा मुखिया अखिलेश यादव की एंट्री हुई है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट करते हुए ब्रजेश पाठक के लिए लिखा कि आपके विचारों में कभी ऐसा विचलन नहीं था।उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की तरफ से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक के डीएनए को लेकर विवादित पोस्ट की गई। इस पर डीप्टी सीएम भड़क गए। उन्होंने सपा पर जमकर हमला बोला। यही नहीं उन्होंने सपा की सोच पर सवाल खड़ा करते हुए पोस्ट में डिंपल यादव तक का जिक्र कर डाला। सोशल मीडिया पर की गईं इन पोस्ट के बाद सियासी बयानबाजी शुरू हो गई। कई जिलों में भाजपाइयों ने सपा के खिलाफ प्रदर्शन करके पुतला तक पूंका। जारी बयानबाजी के बीच अब अखिलेश यादव ने अपने एक्स हैंडल से एक पोस्ट किया। इसमें उन्होंने ब्रजेश पाठक को आत्ममंथन करने की सलाह दी है। अखिलेश ने लिखा कि आपके विचारों में पहले कभी भी ऐसा विचलन न था। जिससे आप व्यक्तिगत स्तर पर आदर्श को भूल जाएं और अपना शाब्दिक संतुलन खो बैठें। आपको एकांत में बैठकर चिंतन करना चाहिए। अखिलेश यादव ने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि 'हमने उप मुख्यमंत्री की टिप्पणी का संज्ञान लेकर पार्टी स्तर पर उन लोगों को समझाने की बात कही है जो समाजवादियों के डीएनए पर दी गई आपकी 'अति अशोभनीय टिप्पणी' से आहत होकर अपना आपा खो बैठे। हमने उनसे आश्वासन ले लिया है कि आगे से ऐसा न हो। लेकिन, आपसे भी यही आशा है कि आप जिस तरह की बयानबाजी निंरतर करते आए हैं उस पर भी विराम लगेगा। आप जिस स्तर के बयान देते हैं वो भले आपको अपने व्यक्तिगत स्तर पर उचित लगते हों, लेकिन आपके पद की मर्यादा और शालीनता के पैमाने पर किसी भी तरह उचित नहीं ठहराए जा सकते है।'उन्होंने आगे लिखा कि 'एक स्वास्थ्य मंत्री के रूप में आपसे ये अपेक्षा है कि आप ये समझते होंगे कि किसी के व्यक्तिगत 'डीएनए' पर भद्दी बात करना दरअसल किसी व्यक्ति नहीं वरन युगों-युगों तक पीछे जाकर उसके मूलवंश और मूल उद्गम पर आरोप लगाना है। ऐसे में आपसे आग्रह है कि राजनीति करते-करते आप अपनी नैतिकता न भूलिए और न ही धर्म जैसी संवेदनशील भावना को जाने-अंजाने में ठेस पहुंचाइए।'अखिलेश यहीं नहीं रुके उन्होंने आगे लिखा कि 'आशा है आप अपनी टिप्पणी के लिए अपने अंदर बैठे हुए उस अच्छे इंसान से क्षमा मांगेंगे, जो पहले ऐसा न था। आप यदि एकांत में बैठकर अपने विगत वर्षों के व्यवहार, विचार और व्यक्तित्व का निष्पक्ष अवलोकन करेंगे तो पाएंगे कि मूल रूप से आपके विचारों में पहले कभी भी ऐसा विचलन न था, न ही आपकी राजनीतिक आकांक्षाएं ऐसी थीं कि आप व्यक्तिगत स्तर पर आदर्श को भूल जाएं और अपना शाब्दिक संतुलन खो बैठें। आशा है इस बात को यहीं खत्म समझा जाएगा।

प्याज के नीचे छिपाकर रखे थे प्रतिबंधित पशु, पुलिस ने चार तस्कर पकड़े

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। वाराणसी की लंका थाने की पुलिस ने एक ट्रक को पकड़ा है जिसमें प्याज की खेप के नीचे 24 पशु बरामद हुए हैं। इसके पहले एनकाउंटर में चार बदमाशों को गिरफ्तार किया गया है इनमें दो को गोली लगी है।वाराणसी में लंका पुलिस ने लोटयूबीर पुलिया के समीप चेकिंग के दौरान संदिग्ध ट्रक को रोका तो उसमें सवार तस्करों ने पुलिस पर गोली चला दी। रविवार की सुबह पुलिस की जवाबी करवाई में दो तस्करों के पैर में गोली लगी है। कुल चार तस्कर गिफ्तार किए गए हैं। तस्करों ने ट्रक के ऊपर प्याज लोड किया था, नीचे 24 पशु पुलिस को बरामद हुए हैं।पुलिस घायलों का इलाज कराने के साथ ही अन्य विधिक कार्रवाई में जुट गई। पकड़े गए अपराधियों के रिकॉर्ड खंगाले जा रहे हैं।

जौनपुर में तस्करों ने पुलिसकर्मी पर चढ़ाई पिकअप, खंगाले जा रहे सीसीटीवी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

जौनपुर। यूपी के जौनपुर में गोतस्करों ने सिपाही को अपनी पिकअप से कुचल दिया। ट्रॉमा सेंटर में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। इस मामले के बाद पुलिस महकमे में शोक माहौल व्याप्त है। रूप से घायल हो गए थे। जिसके बाद पूरे जिले की पुलिस एक्शन मोड में हो गई और गौतस्करों की धर पकड़ तेज कर दी।शनिवार देर रात मुखबिरों की सूचना पर एसओजी टीम के साथ चंदवक और जलालपुर थाने की पुलिस टीम ने तस्करों की तलाश की जा रही है।जौनपुर के जलालपुर थाना क्षेत्र में हुई घटना के बाद शनिवार देर रात चंदवक थाने को गौतस्करों ने अपना निशाना बनाया। थाना क्षेत्र के खुज्जी मोड़ पर शनिवार रात करीब पौने बारह बजे एक दर्दनाक हादसा हो गया। जिसमें चंदवक थाने के 36 वर्षीय एक आरक्षी के गंभीर रूप से घायल होने के बाद ट्रॉमा सेंटर में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। कुछ दिनों पहले ही जलालपुर में एक महिला दरोगा समेत कई पुलिसकर्मियों के ऊपर गोतस्करों ने पिकअप चढ़ा कर रौंदने का प्रयास किया, जिसमें महिला दरोगा समेत अन्य पुलिसकर्मी गंभीर आजमगढ़-वाराणसी मार्ग पर स्थित खुज्जी मोड़ पर घेराबंदी कर रखी थी। पुलिस को किसी बड़े शातिर गौतस्कर की सूचना मिली थी। रात लगभग 11:40 पर पुलिस को आजमगढ़ की तरफ से पिकअप तेज रफ्तार में आती हुई दिखी, जिसके बाद पुलिस ने उसे रोकने का प्रयास किया, लेकिन बैरिकेडिंग तोड़ते हुए पिकअप चालक वाराणसी की तरफ भाग निकला। पुलिस ने उधर रेलवे क्रॉसिंग पर पहले से ही रास्ता बंद करवा रखा था। जिसपर पिकअप चालक वापस खुज्जी की तरफ गाड़ी घुमाकर लाया खुज्जी मोड़ पर दुबारा बैरिकेडिंग और गाड़ियों से रास्ता बंद देख पिकअप चालक ने गाड़ी का रुख पटरियों की तरफ कर दिया। पिकअप चालक ने बर्बरतापूर्वक सड़क के किनारे खड़ी गाड़ियों को टक्कर मारते हुए आरक्षी दुर्गेश सिंह को कुचल दिया। अपने साथी को घायल देख सभी पुलिस कर्मी उसे बचाने दौड़े पिकअप मारिकपुर गांव के रास्ते फरार हो गया। इधर, घायल दुर्गेश सिंह के सिर में गंभीर चोट आने की वजह से निरीक्षक सत्य प्रकाश सिंह तत्काल दुर्गेश सिंह को गाड़ी लादकर सीधा ट्रॉ सेंटर रवाना हो गए। काफी कोशिशों के बावजूद ब्रेन हैमरेज के कारण देर रात 2.40 बजे आरक्षी दुर्गेश सिंह की मौत हो गई।इस घटना से पूरे पुलिस महकमे में शोक की लहर दौड़ गई। एसपी जौनपुर और एसपी सिटी रात लगभग साढ़े तीन बजे चंदवक थाने पहुंच गए। इस बाबत, चंदवक थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने बताया कि मृत आरक्षी का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए टीम दबिश दे रही है। मूल रूप से चंदौली जिले के सकलडीहा थाना क्षेत्र के रहने वाले आरक्षी दुर्गेश सिंह (36) 2011 बैच के आरक्षी थे। कर्तव्यनिष्ठ और मिलनसार व्यक्ति थे। इनकी पत्नी प्रियंका सिंह कर्रा स्थित प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका के पद पर तैनात है। इनकी सात वर्षीय एक बेटी भी है। देर रात जब पत्नी को इस घटना के बारे में पता चला तो वह सदमे से बेहोश हो गईं।

मिर्जापुर, सोनभद्र

मंत्री ने ग्रैंड अगस्त्य परिवार को नए प्रतिष्ठान की दिए शुभकामनाएं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। भाजपा के वरिष्ठ नेता मध्य प्रदेश शासन में मंत्री पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम विभाग प्रह्लाद पटेल के सिंगरौली आगमन पर मध्य प्रदेश टूरिज्म के प्रतिष्ठित होटल ग्रैंड अगस्त्य में भव्य स्वागत किया गया। स्वागत के इस अप्रतिम क्षण में जिले के सांसद मध्य प्रदेश शासन की राज्य मंत्री एवं सभी विधायक व अन्य जनप्रतिनिधि, संगठन के पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। मंत्री ने ग्रैंड अगस्त्य परिवार को इस नए प्रतिष्ठान की शुरुआत के लिए शुभकामनाएं दिया।पारिवारिक वातावरण में अपना महत्वपूर्ण समय विताकर संचालकों का धनबाद किया।संचालक बंधु राकेश अहलावत, अशोक पूनिया एवं चड्ढा ने मंत्री के आगमन के लिए कृतज्ञता ज्ञापित किया।इस अवसर पर मंत्री जिले में आयोजित विभिन्न जनकल्याणकारी एवं पारिवारिक कार्यक्रमों में शामिल हुए। श्रृंगी ऋषि की तपस्थली सिंगरौली में आपका हार्दिक स्वागत बंदन अभिनंदन है।

बरातियों पर हमले के मामले में चार पर मुकदमा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
जिगना। क्षेत्र के खैरा गांव में बृहस्पतिवार की रात बरातियों पर हमला करने के मामले में दूल्हे के चचेरे भाई की तहरीर पर पुलिस चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।प्रयागराज जनपद के मांडा क्षेत्र के सुरवा दलापुर गांव से बरात जिगना थाना क्षेत्र के खैरा गांव में आई थी। रात में जयमाल के बाद बराती जनवासा में आर्केस्ट्रा देख रहे थे। आरोप है कि इसी बीच बस्ती के कुछ लोग लाठी-डंडे लेकर पहुंचे और बरातियों पर हमला कर दिया।इससे दूल्हा और उसके चचेरे भाई चंद्र प्रकाश समेत छह लोग घायल हो गए। घायल चंद्र प्रकाश ने खैरा गांव निवासी अंबुज, सौरभ, विकास और मांडा के कोसड़ा निवासी मनीष के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। थानाध्यक्ष अभय कुमार सिंह ने बताया कि मारपीट करने वाले चार लोगों पर मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

इन्द्र के अहंकार को मिटाने के लिए भगवान ने गिरिराज का पूजन करवाया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। राबर्ट्सगंज स्थित टीचर्स कॉलोनी (न्यू कालोनी) में हो रही सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ के पांचवें दिन शनिवार को ऋषिकेश से पधारे श्री श्री 1008श्री परम पूज्य संत स्वामी हरिदास जी महराज ने श्रीमद्भागवत अमृतकथा के दौरान माखन चोरी लीला और चीर हरण के बारे में बताया कि भगवान श्री कृष्ण ब्रज में माखन चोरी लीला करके मन को चुरा लिया वही चीर हरण लीला के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण ने लोगों को यह संदेश दिया कि जिसके ऊपर मेरी कृपा होती है वासना रूपी वस्त्र को चुराकर उसे अपने करीब कर लेता हूं। स्वामी महाराज जी ने भगवान श्री कृष्ण व कालिया नाग की रोचक कथा सुनाई श्रीकृष्ण ने कालिया नाग का मर्दन कर भक्ति रूपी यमुना को शुद्ध कर दिया तथा श्रीकृष्ण भगवान ने इंद्र के अहंकार को मिटाने के लिए गिरिराज का पूजन करवाया अर्थात प्रकृति पूजन की प्रधानता दी। कथा में स्वामी महराज जी द्वारा बताया गया कि भगवान श्री कृष्ण प्रकृति, गौ, ब्राह्मण एवं संत की पूजा किया। भक्त का हृदय जब निर्मल होता है तो भगवान स्वयं भक्त के घर पहुंच जाते हैं। वृंदावन से पधारे कलाकारों के द्वारा माखन चोरी लीला एवं गिरिराज पूजन की सुंदर झांकी भी प्रस्तुत की गई जिससे पाण्डाल में बैठे भक्तगण भक्ति में विभोर हो गए। यज्ञ में निरंतर चल रहे पूजन एवं पारायण के दौरान भक्तगणों के द्वारा यज्ञ मण्डप की परिक्रमा किया गया। कथा प्रतिदिन सायं 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक होना सुनिश्चित है। कार्यक्रम में मुरलीधर शुक्ल, कृष्ण कान्त देव पाण्डेय, मिठाई लाल सोनी,शिवनारायण चौबे , अवधेश नारायण शुक्ल, उमेश मिश्रा, विनोद मिश्रा,सुनील त्रिपाठी,अशोक कुमार शुक्ल, और आनंद ओझा, बलिराम सोनी , विनोद कुमार शुक्ल, शिवशंकर देव आदि भक्तगण उपस्थित रहे। कल छठवें दिन रविवार को भगवान की महा रासलीला एवं रुक्मिणी विवाह की कथा सुनाई जायेगी।

रानी अहिल्याबाई होल्कर की जयन्ती वर्ष 21 से 31 तक मनाया जाएगा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी सोनभद्र की प्रेसवार्ता शनिवार को सवेरा होटल के हाल में आयोजित

की गयी है, प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष दिलिप सिंह पटेल ने बताया कि पुण्यश्लोक रानी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयन्ती वर्ष है। उनका जन्म 31 मई 1725 में महाराष्ट्र के चौड़ी गांव में हुआ था। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने काशी विश्वनाथ कॉरिडोर में इनकी प्रतिमा स्थापित करते हुए बताया कि पुण्यश्लोक रानी अहिल्याबाई होल्कर काशी विश्वनाथ से लेकर सोमनाथ तक अनेकों मंदिरों का जीर्णोधार कराया। प्रचीनता और आधुनिकता का संगम जो उनके जीवन में था, आज देश उसे आदर्श मानकर आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के निर्देशानुसार पार्टी ने 21 से 31 मई 2025 तक देश के सभी जिलों में वृहद स्तर पर पुण्यश्लोक रानी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयन्ती मनाने का निर्णय लिया है।जिस क्रम में जनपद सोनभद्र 21 से 31 मई तक विभिन्न कार्यक्रमों के तहत मनाया जाएगा जिसमें जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में बैठक कर संबंधित पदाधिकारी को जिम्मेदारी दी जाएगी इस मौके पर राज्य मंत्री संजीव कुमार गोड, भाजपा जिला अध्यक्ष नंदलाल गुप्ता जिला प्रभारी अनिल सिंह नरेंद्र कुशवाहा अजीत रावत पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक मिश्रा , अनूप तिवारी बृजेश श्रीवास्तव सहित आदि लोग मौजूद रहे।

इन्द्र के अहंकार को मिटाने के लिए भगवान ने गिरिराज का पूजन करवाया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। राबर्ट्सगंज स्थित टीचर्स कॉलोनी (न्यू कालोनी) में हो रही सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ के पांचवें दिन शनिवार को ऋषिकेश से पधारे श्री श्री 1008श्री परम पूज्य संत स्वामी हरिदास जी महराज ने श्रीमद्भागवत अमृतकथा के दौरान

माखन चोरी लीला और चीर हरण के बारे में बताया कि भगवान श्री कृष्ण ब्रज में माखन चोरी लीला करके मन को चुरा लिया वही चीर हरण लीला के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण ने लोगों को यह संदेश दिया कि जिसके ऊपर मेरी कृपा होती है वासना रूपी वस्त्र को चुराकर उसे अपने करीब कर लेता हूं। स्वामी महाराज जी ने भगवान श्री कृष्ण व कालिया नाग की रोचक कथा सुनाई श्रीकृष्ण ने कालिया नाग का मर्दन कर भक्ति रूपी यमुना को शुद्ध कर दिया तथा श्रीकृष्ण भगवान ने इंद्र के अहंकार को मिटाने के लिए गिरिराज का पूजन करवाया अर्थात प्रकृति पूजन की प्रधानता दी। कथा में स्वामी महराज जी द्वारा बताया गया कि भगवान श्री कृष्ण प्रकृति, गौ, ब्राह्मण एवं संत की पूजा किया। भक्त का हृदय जब निर्मल होता है तो भगवान स्वयं भक्त के घर पहुंच जाते हैं। वृंदावन से पधारे कलाकारों के द्वारा माखन चोरी लीला एवं गिरिराज पूजन की सुंदर झांकी भी प्रस्तुत की गई जिससे पाण्डाल में बैठे भक्तगण भक्ति में विभोर हो गए। यज्ञ में निरंतर चल रहे पूजन एवं पारायण के दौरान भक्तगणों के द्वारा यज्ञ मण्डप की परिक्रमा किया गया। कथा प्रतिदिन सायं 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक होना सुनिश्चित है। कार्यक्रम में मुरलीधर शुक्ल, कृष्ण कान्त देव पाण्डेय, मिठाई लाल सोनी,शिवनारायण चौबे , अवधेश नारायण शुक्ल, उमेश मिश्रा, विनोद मिश्रा,सुनील त्रिपाठी,अशोक कुमार शुक्ल, और आनंद ओझा, बलराम सोनी , विनोद कुमार शुक्ल, शिवशंकर देव आदि भक्तगण उपस्थित रहे। कल छठवें दिन रविवार को भगवान की महा रासलीला एवं रुक्मिणी विवाह की कथा सुनाई जायेगी।

साइकिल वितरण में घोर अव्यवस्था पर युवा मंच ने चिंता जताई

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। कल भीषण गर्मी के मौसम में आदिवासी छात्राओं के

जिला मुख्यालय स्थित डायट परिसर में साइकिल वितरण कार्यक्रम में घोर अव्यवस्था पर युवा मंच ने सीएम योगी आदित्यनाथ को एक्स पर पोस्ट कर चिंता जताई है। समाचार पत्रों में भीषण गर्मी में तीन छात्राओं के बेहोश होने और अभिभावकों से लेकर बच्चों तक हुई परेशानियों की खबर को संलग्न कर कहा गया कि सोनभद्र हेडक्वार्टर से 150 किमी दूर तक दुर्गम क्षेत्रों में गांव बसे हैं। जहां से आवागमन बेहद मुश्किल काम है। ऐसे में साइकिल वितरण ब्लाक स्तर पर होना चाहिए। इससे छात्राओं और अभिभावकों को परेशानी से बचाया जा सकता है और उनका अनावश्यक किराया खर्च भी बचता। मांग की गई है कि इसे करके भविष्य में इस तरह की अमानवीय परिस्थिति से बचा जा सकता है प्रेस को जारी बयान में युवा मंच की जिला संयोजक सविता गोंड व अध्यक्ष रूबी सिंह गोंड ने कहा कि गरीबों विशेषकर आदिवासियों व दलितों के प्रति शासन व प्रशासन के उपेक्षा भरे नजरिए और कार्रवाई का परिणाम साईकिल वितरण में हुई घोर अव्यवस्था है। जहां कई घंटे देर से राज्य मंत्री पहुंचते है, मंच पर तो कूलर लगता है पर आदिवासी बच्चियों और उनके अभिभावकों के लिए एक पंखा तक नहीं लगता। यहां तक कि सुबह से बुलाई गई बच्चियों के लिए पीने के पानी और भोजन की भी कोई समुचित व्यवस्था नहीं की गई थी। दरअसल नौकरशाही और सरकारों द्वारा जो नीतियां बनाई जा रही हैं वह सोनभद्र की संरचना के लिहाज से व्यवाहारिक नहीं है। पठारी-पहाड़ी इलाका और प्रदेश का दूसरे सबसे बड़े क्षेत्रफल वाले जिले में जिला मुख्यालय पर केंद्रित कार्यक्रम करने की जगह यदि इसे ब्लॉक स्तर पर किया जाता तो बेहतर रहता। युवा मंच नेताओं ने कहा कि इस जनपद में आदिवासी छात्र-छात्राएं शिक्षा के मामले में सरकार की उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। बार-बार मांग करने के बावजूद आदिवासी लड़कियों के लिए आवासीय डिग्री कॉलेज बनाने की मांग को पूरा नहीं किया गया। चकरिया और पिपरखांड में बने कौशल विकास केंद्रों को आज तक चालू नहीं किया गया। सभी तहसीलों में एक पॉलिटेक्निक कॉलेज और हर ब्लॉक में आईटीआई कॉलेज खोलने और उसमें लड़कियों के लिए फैशन डिजाइनिंग, कॉस्मेटिक, ब्यूटी पार्लर, ड्रेस मेकिंग, नर्सिंग, पैरामेडिकल ट्रेनिंग आदि क्षेत्र में पढ़ाई सुनिश्चित करने की बात भी नहीं मानी जा रही है। कहा कि अभी जो मानक साइकिल वितरण में तय किया गया है उसमें बहुत कम संख्या में ही छात्राओं को साइकिल मिल पाती है। इसलिए मांग की गई कि दलित, आदिवासी और गरीब सभी छात्राओं को साइकिल का वितरण किया जाना चाहिए।

कोर्ट के आदेश के चार वर्ष बाद भी नहीं हुई पैमाइश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मिर्जापुर। जिले की चारों तहसील पर शनिवार को आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में अधिकारियों जनता की शिकायतें सुनीं। प्रभारी

जिलाधिकारी विशाल कुमार ने मड़िहान में फरियाद सुनी।यहां पड़रिया निवासी राधेश्याम ने शिकायत की कि एसडीएम न्यायालय से आदेश के चार साल बाद भी जमीन की पैमाइश नहीं कराई गई। इस पर प्रभारी डीएम ने कार्रवाई का निर्देश दिया। चारों तहसीलों में 372 शिकायतें आईं, जिनमें से 23 का मौके पर निस्तारण हुआ। मड़िहान में प्रभारी डीएम व सीडीओ विशाल कुमार की अध्यक्षता में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन हुआ। यहां 62 शिकायतें आईं, जिनमें से सिर्फ पांच का समाधान हो पाया।तहसील क्षेत्र के पड़रिया गांव निवासी राधेश्याम ने कहा कि उपजिलाधिकारी न्यायालय ने चार साल पहले पैमाइश का आदेश दिया था। बार-बार बुलाने पर भी कानूनगो पैमाइश करने नहीं आ रहे हैं। चौबेपुर गांव के ओमप्रकाश सिंह ने प्रार्थना पत्र देकर चकरोड की पैमाइश कराने की मांग की।उन्होंने चकरोड पर भूमाफिया का कब्जा होने से आवागमन में परेशानी हो रही है। इस मौके पर एसपी सोमेन बर्मा, सीएमओ सीएल वर्मा, एसडीएम सौम्या मिश्रा, तहसीलदार आशीष पांडेय, नायब तहसीलदार लालचंद उपस्थित रहे।सदर तहसील में एडीएम भू-राजस्व सत्यप्रकाश सिंह ने शिकायतें सुनीं। लखमापुर चंदईपुर की सविता देवी ने शिकायत की कि उसने एक महिला से जमीन खरीदी था। बाद में महिला ने उसी जमीन को दूसरे व्यक्ति को बेच दिया। अब समस्या हो रही है यहां 151 शिकायतें आईं, जिनमें से 13 का निस्तारण हुआ। इस अवसर पर एएसपी नितेश सिंह, एसडीएम सदर गुलाबचंद्र, सीओ सिटी विवेक जावला व अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। चुनार तहसील में एडीएम अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे अमरेंद्र कुमार वर्मा ने सुनवाई की। नरायनपुर ब्लॉक के धरम्मरपुर गांव की अनीता देवी ने प्रार्थना पत्र देकर बताया कहा कि उनके घर के सामने रास्ते पर गांव के अजय वर्मा ने अतिक्रमण कर लिया है, जिससे आवागमन में दिक्कत हो रही है। हुसेनपुर निवासिनी रिंकी कुमारी ने प्रार्थना पत्र देकर कहा कि कोटा आवंटन की बैठक में ग्राम प्रधान ने हंगामा करा दिया था, जिससे कार्यवाही पूरी नहीं हो सकी। यहां 73 शिकायतें आईं, जिनमें से चार का निस्तारण हुआ। इस दौरान एसडीएम राजेश कुमार वर्मा, अपर पुलिस अधीक्षक आपरेशन ओपी सिंह, तहसीलदार योगेन्द्र शरण शाह, नायब तहसीलदार संजय सिंह आदि मौजूद रहे।

आयुषी यादव इंटरमीडिएट सीबीएसई बोर्ड में 90%मार्क्स के साथ फर्स्ट डिवीजन प्राप्त किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। और इंटरमीडिएट की पढ़ाई के लिए वाराणसी गई और वाराणसी में बी.एन. एस. इंग्लिश स्कूल, लंका ,वाराणसी से इन्होंने इंटरमीडिएट सीबीएसई बोर्ड में 90ज्ञ् मार्क्स के साथ फर्स्ट डिवीजन प्राप्त किया । और अपने क्लास में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। तीसरा स्थान प्राप्त करने पर विद्यालय की तरफ से आयुषी यादव को शील्ड मेडल और माला के साथ सम्मानित किया गया यह हम सभी दुद्धी वासियों के लिए गर्व की बात है । आयुषी की इस सफलता के पीछे इनकी मां कविता यादव का पूरा सपोर्ट है। जिसकी वजह से आयुषीने वाराणसी में जाकर अपना नाम तथा अपने माता-पिता का नाम रोशन किया आयुषी ने इस सफलता के पीछे अपनी मां कविता यादव और अपने पिता महेंद्र यादव का संघर्ष बताया। आयुषी ने अपने माता पिता के साथ साथ अपने जिले का नाम भी रोशन किया।

स्कूल जा रही कक्षा तीन की छात्रा को ट्रैक्टर ने कुचला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
चुनार। इस सत्र के अंतिम दिन शनिवार को सुबह स्कूल जा रही कक्षा तीन की छात्रा को कैलहट

स्थित रेलवे अंडर पास में ट्रैक्टर ने कुचल दिया। इससे मौके पर छात्रा की मौत हो गई। हादसे के बाद परिजनों और ग्रामीणों ने जाम लगा दिया। मौके पर पहुंची पुलिस और अधिकारियों ने परिजनों को समझाकर जाम समाप्त कराया। क्षेत्र के पचोखरा निवासी शिवमूरत यादव की बेटी प्रियांशी यादव (13) कैलहट स्थित एक स्कूल में कक्षा तीन में पढ़ती थी। शनिवार को सत्र का अंतिम दिन था। छात्रा सुबह साढ़े सात बजे साइकिल से स्कूल पढ़ने जा रही थी। गांव के बाहर रेलवे लाइन पर बने अंडर पास में पहुंची कि सामने से पहुंचे ईंट लदे ट्रैक्टर ने उसे कुचल दिया। इससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई।हादसे की जानकारी मिलते ही परिजन और आसपास के लोग पहुंच गए। आक्रोशित लोग हंगामा करने लगे और जाम लगा दिया। सूचना पाकर कोतवाल रविंद्र भूषण मौर्य पहुंच गए। उन्होंने परिजनों को समझाने का प्रयास किया लेकिन वे डीएम को बुलाने की मांग को लेकर अड़े रहे। कुछ देर बाद एसडीएम राजेश कुमार वर्मा पहुचे। एसडीएम ने चालक की गिरफ्तारी और मुआवजा दिलाने का आश्वासन दिया तब दो घंटे के बाद जाम समाप्त हुआ। प्रियांशी एक भाई और चार बहनों में तीसरे नंबर की थी। उसके पिता मजदूरी करते हैं। चुनार कोतवाल रविंद्र भूषण ने बताया कि ट्रैक्टर की चपेट में आकर छात्रा की मौत हुई। चालक को हिरासत में लिया गया है। हमास ने 20 माह बाद भी नहीं छोड़े 23 बंधक, तीन की हालत नाजुक।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर व भारतीय सेना के शौर्य को सलाम करने के लिए राबर्ट्सगंज सोनभद्र में विशाल तिरंगा यात्रा निकाली गई

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। यात्रा सवेरा कैंपस से शीतला मंदिर तक निकाली गई। सैकड़ों की संख्या में एकत्र हुए लोगों ने हाथों में तिरंगा लेकर हिंदुस्तान जिंदाबाद पाकिस्तान मुर्दाबाद भारत

माता की जय भारतीय सेना की जय के गगनभेदी नारे लगाए। साथ में चल रहे डीजे पर बज रहे देशभक्ति गीतों ने वातावरण में देश प्रेम के प्रति उत्साह व जोश को दुगुना कर दिया। यात्रा में शामिल लोगों ने कर्नल सोफिया कुरैशी व विंग कमांडर व्योमिका सिंह की तस्वीर लेकर भारत की इन बहादुर बेटियों को दुश्मन को सबक सिखाने में अहम भूमिका निभाने पर धन्यवाद दिया। लोगों ने कहा कि हिंदुस्तान की इन बहादुर बेटियों पर देश को गर्व है। इस मौके पर मुख्यअतिथि काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष दिलिप सिंह पटेल ने कहा कि हमारे भारतीय सेना के वीर रणबांकुरों ने पाकिस्तान के दांत खट्टे कर दिए। भारत की सेना के शौर्य को पूरी दुनिया देख चुकी है ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर। भारत मां के वीर सपूतों के रहते देश की सरहद को कोई आंख नहीं दिखा सकता। ये विशाल तिरंगा यात्रा ऐसे ही वीर सपूतों व भारतीय सेना के शौर्य को सलाम करने के लिए निकाली गई है। हर भारतीय को ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर गर्व है। सेना ने घर में घुसकर पाकिस्तान को उसकी करनी का दंड दिया। तिरंगे की आन बान और शान के लिए भारत का बच्चा बच्चा मिटने को तैयार है। जिन बेटियों का सिंदूर आतंकियों ने छीना था हमारी सेना ने उसका बदला ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को अंजाम देकर ले लिया है। इस मौके पर राज्यमंत्री संजीव कुमार गोंड ने कहा कि आपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत ने न केवल वीरता का प्रदर्शन किया बल्कि यह भी स्पष्ट किया संदेश दिया कि नया भारत आतंकवाद का जवाब उसी की भाषा मे देने मे सक्षम है, सेना है तो सुकुन है। सेना का गौरव गान जन जन मे हो रहा है।तिरंगा यात्रा के समापन पर भाजपा जिलाध्यक्ष नन्द लाल जी ने कहा कि पीएम मोदी ने स्पष्ट कर दिया है कि आतंक और बातचीत एक साथ नही चल सकते उन्होने कहा यह तिरंगा यात्रा भारतीय सेना के प्रति आभार प्रकट करने के लिए निकाली गई है। सेना ने संयमित ढंग से शौर्य का परिचय देते हुए यह सिद्ध कर दिया कि भारत कमजोर नही है। इस मौके पर जिला प्रभारी अनिल सिंह, अनिल कुमार मौर्या, रमेश मिश्रा, नरेन्द्र कुशवाहा, अजीत रावत, जगदीश पटेल, शारदा खरवार, रामनरेश पासवान, अशोक मिश्रा, ओमकार केशरी, अजीत चौबे, अमरेश पटेल, कुसुम शर्मा, प्रसन्न पटेल, अनूप तिवारी, रमेश पटेल, रामसुन्दर निषाद, अमरनाथ पटेल, ओमप्रकाश दूबे, रंजना सिंह, अशोक मौर्या, अनिल सिंह गौतम, शंम्भू नारायण सिंह, विशाल जायसवाल, मनोज सिंह, पुष्पा सिंह, गुडिया तिवारी, किरन तिवारी, रुबी गुप्ता, चांदप्रकाश जैन, रामनिवास तोमर, नार सिंह पटेल, बीएन गुप्ता, प्रिया सोनकर, आशुतोश चतुर्वेदी, मीनू चौबे, विनय श्रीवास्तव, दिलिप चौबे, अंकुर सिंह, रामबली मौर्या सहित सभी मण्डल अध्यक्ष व आम जनमानस उपस्थित रहा।

स्पोर्ट्स

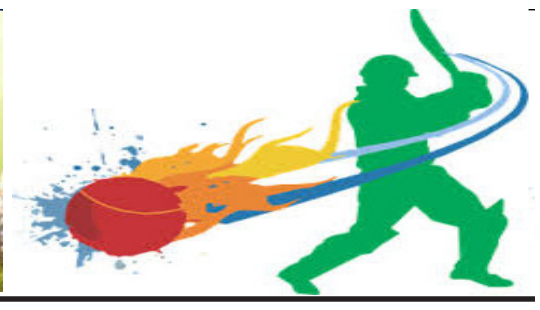

नीरज की नजरें अब 90 मीटर से अधिक भाला फेंकने पर, कहा- जेलेजनी के साथ कर रहे कुछ पहलुओं पर काम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। दोहरे ओलंपिक पदक विजेता 27 वर्षीय नीरज ने तीसरे प्रयास में भाले को 90.23 मीटर तक पहुंचाया और 90 मीटर या इससे अधिक करने वाले खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो गए जिसकी अगुवाई उनके वर्तमान कोच चेक गणराज्य के जान जेलेजनी कर रहे हैं। राहत और खुशी के साथ-साथ थोड़ी निराशा भी महसूस कर रहे भारतीय भाला फेंक स्टार नीरज चोपड़ा ने कहा कि अब जबकि वह 90 मीटर का आंकड़ा पार कर चुके हैं तो वह और आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे क्योंकि उनका शरीर अब उन चोट से लगभग मुक्त हो गया है जो पिछले कुछ वर्षों से उन्हें परेशान कर रहीं थी। दोहरे ओलंपिक पदक विजेता 27 वर्षीय नीरज ने तीसरे प्रयास में भाले को 90.23 मीटर तक पहुंचाया और 90 मीटर या इससे अधिक करने वाले खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो गए जिसकी अगुवाई उनके वर्तमान कोच चेक गणराज्य के जान जेलेजनी कर रहे हैं। वह यह उपलब्धि हासिल करने वाले तीसरे एशियाई और कुल मिलाकर 25वें खिलाड़ी बने। हालांकि जर्मनी के जूलियन वेबर ने बाजी पलट दी

और अपने छठे और अंतिम थ्रो में 91.06 मीटर के प्रयास के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया और स्वर्ण पदक जीता।नीरज ने स्पर्धा के बाद कहा, 'मैं 90 मीटर के प्रयास से बहुत खुश हूं लेकिन यह असल में थोड़ा खट्टा-मीठा अनुभव है। लेकिन कोई बात नहीं मैं और मेरे कोच अब भी मेरे थ्रो के कुछ पहलुओं पर काम कर रहे हैं। हमने इस साल फरवरी में ही साथ काम करना शुरू किया था। मैं अब भी चीजें सीख रहा हूं। पिछले कुछ वर्षों से मुझे हमेशा ग्रोइन में कुछ महसूस होता था। इस वजह से मैं अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे पाया। इस साल मैं बहुत बेहतर महसूस कर रहा हूं। हम कुछ पहलुओं पर भी काम करेंगे और इसलिए मेरा मानना है कि मैं इस साल विश्व चैंपियनशिप से पहले की प्रतियोगिताओं में 90 मीटर से अधिक भाला फेंक सकता हूं।विश्व चैंपियनशिप 13 से 21 सितंबर तक टोक्यो में आयोजित की जाएगी जिसमें हरियाणा के नीरज गत चैंपियन हैं। नीरज के प्रदर्शन में जेलेजनी के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। पिछले साल नवंबर में उन्हें नीरज के कोच के रूप में नियुक्त किया गया था लेकिन इस दिग्गज भारतीय खिलाड़ी ने कहा कि वे फरवरी से ही साथ काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'कोच जेलेजनी के साथ दक्षिण अफ्रीका में बहुत मेहनत की है। ' जेलेजनी के नाम 98.48 मीटर तक भाला फेंकने का विश्व रिकॉर्ड है और वह आमतौर पर डायमंड लीग में नहीं जाते लेकिन चेक गणराज्य का यह कोच चोपड़ा के साथ यहां आया था क्योंकि उन्हें लगा था कि इस प्रतियोगिता में 90 मीटर के आंकड़े को पार किया जा सकता है।

भारत की शीर्ष खिलाड़ी श्रीजा अकुला टेटे विश्व चैंपियनशिप में हारीं, युगल में भारत को मिली सफलता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। मानव ठक्कर और मानुष शाह की पुरुष युगल भारतीय जोड़ी ने भी जीत के साथ अपना अभियान शुरू किया। अकुला थाईलैंड की सुथासिनी सावेत्ता से 1-4 (11-9 8-11 6-11 5-11 2-11) से हार गईं। भारत की नंबर एक खिलाड़ी श्रीजा अकुला पहले दौर में हार गईं, लेकिन मुखर्जी बहनों (अयहिका और सुतिर्था) के साथ दीया चिताले और यशस्विनी घोरपड़े की जोड़ी ने शनिवार को यहां टेबल टेनिस विश्व चैंपियनशिप में अपने-अपने महिला युगल के शुरुआती मैच जीत लिए। मानव ठक्कर और मानुष शाह की पुरुष युगल भारतीय जोड़ी ने भी जीत के साथ अपना अभियान शुरू किया। अकुला थाईलैंड की सुथासिनी सावेत्ता से 1-4 (11-9 8-11 6-11 5-11 2-11) से हार गईं। यह भारतीय खिलाड़ी के लिए निराशाजनक प्रदर्शन रहा क्योंकि वह दुनिया की 84वें नंबर की खिलाड़ी से हारकर टूर्नामेंट के शुरुआती दौर से ही बाहर हो गई। एशियाई खेलों की पदक विजेता अयहिका और सुतिर्था ने तुर्किये की ओजगे यिलमाज और एसे हाराक की जोड़ी को पांच गेमों के रोमांचक मुकाबले में 3-2 (4-11 11-9 10-12 11-9 11-7) से हराया।

फिट बुमराह कप्तानी के लिए पहली पसंद', इशांत ने बताया किन परिस्थितियों में गिल बन सकते हैं कप्तान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली । इशांत ने विराट कोहली के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा पर भी बात की। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए इशांत ने कहा कि वह इस फैसले से हैरान हैं क्योंकि विराट अभी भी सुपर फिट हैं। इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए जल्द ही टीम का एलान होने वाला है। सबसे लंबे प्रारूप में टीम इंडिया के नए कप्तान को लेकर इंतजार भी फैंस की दिलचस्पी को और बढ़ा रहा है। इस रेस में जसप्रीत बुमराह और शुभमन गिल हैं। हालांकि, अनुभवी तेज गेंदबाज इशांत शर्मा का कहना है कि इंग्लैंड दौरे पर भारतीय टीम की अगुआई जसप्रीत बुमराह करें और शुभमन गिल को यह पद तभी दिया जा सकता है जब यह तेज गेंदबाज पांच मैच की पूरी टेस्ट सीरीज के लिए फिट नहीं होगा। भारतीय टीम के इंग्लैंड रवाना होने से कुछ सप्ताह पहले रोहित शर्मा के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद कप्तानी की बहस तेज हो गई है। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज की शुरुआत 20 जून से होगी और चार अगस्त तक चलेगी। इशांत ने कहा, 'अगर बुमराह फिट हैं तो मैं कहूंगा कि बुमराह। वह पहली पसंद हैं। उनके पास इतना अनुभव है।

भारत खुश और गौरवान्वित है', 90 मीटर का आंकड़ा पार करने वाले नीरज की पीएम मोदी ने की तारीफ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली । नीरज ने शुक्रवार को दोहा डायमंड लीग में 90.23 मीटर दूर भाला फेंका और आखिरकार 90 मीटर की सीमा को पार कर लिया। हालांकि, उन्हें दूसरे स्थान पर रहना पड़ा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नीरज की तारीफ की है।भारत के स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने करियर में पहली बार 90 मीटर का आंकड़ा छुआ तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी उनकी तारीफ किए बिना नहीं रह सके। उन्होंने दोहा डायमंड लीग में ऐसा किया, लेकिन दूसरे स्थान पर रहे। नीरज की तारीफ करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि उनकी सफलता का श्रेय उनके अथक समर्पण, अनुशासन और जुनून को जाता है। सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पीएम मोदी ने लिखा, 'भारत खुश और गौरवान्वित है।' पीएम ने लिखा, 'शानदार उपलब्धि! दोहा डायमंड लीग 2025 में 90 मीटर का आंकड़ा पार करने और अपना सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत थ्रो हासिल करने के लिए नीरज चोपड़ा को बधाई। यह उनके अथक समर्पण, अनुशासन और जुनून का नतीजा

लिया। हालांकि, उन्हें दूसरे स्थान पर रहना पड़ा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नीरज की तारीफ की है।भारत के स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने करियर में पहली बार 90 मीटर का आंकड़ा छुआ तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी उनकी तारीफ किए बिना नहीं रह सके। उन्होंने दोहा डायमंड लीग में ऐसा किया, लेकिन दूसरे स्थान पर रहे। नीरज की तारीफ करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि उनकी सफलता का श्रेय उनके अथक समर्पण, अनुशासन और जुनून को जाता है। सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पीएम मोदी ने लिखा, 'भारत खुश और गौरवान्वित है।' पीएम ने लिखा, 'शानदार उपलब्धि! दोहा डायमंड लीग 2025 में 90 मीटर दूर भाला फेंका और आखिरकार 90 मीटर की सीमा को पार कर लिया। हालांकि, उन्हें दूसरे स्थान पर रहना पड़ा। जर्मनी के जूलियन वेबर ने अपने अंतिम प्रयास में 91 मीटर दूर भाला फेंका और पहला स्थान हासिल किया।27 वर्षीय दोहरे ओलंपिक पदक विजेता ने अपने तीसरे प्रयास में अपना भाला 90.23 मीटर तक फेंका, जबकि वेबर ने अपने आखिरी प्रयास में 91.06 मीटर का थ्रो फेंका। उनके मौजूदा कोच चेक गणराज्य के यान जेलेज्नी 90 मीटर से अधिक का थ्रो फेंकने वाले भालाफेंक खिलाड़ियों में शीर्ष पर हैं।

भारत के युकी भांबरी ने जोड़ीदार गैलोवे के साथ किया शानदार प्रदर्शन, सेमीफाइनल में पहुंचे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारत और अमेरिका की दूसरी वरीयता प्राप्त जोड़ी ने एक घंटे आठ मिनट चले मुकाबले में अपने गैरवरीयता प्राप्त प्रतिद्वंद्वियों पर 7-5, 6-3 से जीत दर्ज की। युकी और गैलोवे सेमीफइनल में राफेल माटोस और मार्सेलो मेलो की तीसरी वरीय ब्राजीली जोड़ी से भिड़ेंगे।भारत के युकी भांबरी और उनके अमेरिकी जोड़ीदार रॉबर्ट गैलोवे ने शनिवार को क्वेंटिन हैलिस और अल्बानो ओलिवेटी की गैरवरीयता प्राप्त फ्रांसीसी जोड़ी को सीधे सेट में हराकर बॉरडॉक्स चैलेंजर के पुरुष युगल वर्ग के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। भारत और अमेरिका की दूसरी वरीयता प्राप्त जोड़ी ने एक घंटे आठ मिनट चले मुकाबले में अपने गैरवरीयता प्राप्त प्रतिद्वंद्वियों पर 7-5, 6-3 से जीत दर्ज की। युकी और गैलोवे सेमीफइनल में राफेल माटोस और मार्सेलो मेलो की तीसरी वरीय ब्राजीली जोड़ी से भिड़ेंगे। एन श्रीराम बालाजी और उनके मैक्सिको के जोड़ीदार मिगुएल रेयेस-वरेला युगल क्वार्टर फाइनल में हार गए जबकि एकल ड्रॉ में सुमित नागल को पहले दौर में हार का सामना करना पड़ा था।

इटालियन ओपन के फाइनल में पहुंचे सिनर, खिताबी मैच में अब कार्लोस अल्कारेज से होगा सामना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। सिनर ने दुनिया के 12वें नंबर के खिलाड़ी टॉमी पॉल को सेमीफाइनल में 1-6, 6-0, 6-3 से हराया। वह 1976 में एड्रियानो पेनेटा के बाद रोम ट्रॉफी जीतने वाला इटली का पहला पुरुष खिलाड़ी बनने के लिए चुनौती पेश कर रहे हैं। दुनिया के नंबर एक टेनिस खिलाड़ी यानिक सिनर ने टॉमी पॉल के खिलाफ पहला सेट गंवाने के बाद जोरदार वापसी करते हुए इटालियन ओपन टेनिस टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाई जहां उनकी भिड़ंत कार्लोस अल्कारेज से होगी। सिनर ने दुनिया के 12वें नंबर के खिलाड़ी टॉमी पॉल को सेमीफाइनल में 1-6, 6-0, 6-3 से हराया। वह 1976 में एड्रियानो पेनेटा के बाद रोम ट्रॉफी जीतने वाला इटली का पहला पुरुष खिलाड़ी बनने के लिए चुनौती पेश कर रहे हैं। इससे पहले अल्कारेज ने लोरेंजो मुसेटी के खिलाफ 6-3, 7-6 की आसान जीत के साथ खिताबी मुकाबले में जगह बनाई।अल्कारेज ने सिनर के खिलाफ अक्तूबर में चीन ओपन के दौरान दोनों खिलाड़ियों के बीच हुआ पिछला मुकाबला टाईब्रेकर में जीता था। सिनर हालांकि अल्कारेज के खिलाफ उस हार के बाद से लगातार 26 मैच जीत चुके हैं। जनवरी में ऑस्ट्रेलियाई ओपन के रूप में अपनी तीसरी ग्रैंड स्लैम खिताबी जीत के बाद सिनर अपना पहला टूर्नामेंट खेल रहे हैं।मैच से पहले अल्कारेज ने कहा, 'जब हम आपस में भिड़ते हैं तो मुकाबले सामान्यतः उच्च स्तरीय होते हैं। अब देखते हैं फाइनल कैसा रहता है।' अल्कारेज का यह सीजन में क्लेकोर्ट पर तीसरा फाइनल है। उन्होंने मोंटे कार्लो में जीत हासिल की थी, जबकि बार्सिलोना ओपन में उपविजेता रहे थे। मैड्रिड ओपन में वह चोट के कारण हट गए थे। रोम में वह दाएं पांव पर दाहिने पैर के ऊपरी हिस्से को ढकने वाला लंबा काला ब्रेस पहनकर उतरे जो उनके घुटने के नीचे तक जा रहा था। अल्कारेज दूसरी बार इटालियन ओपन खेल रहे हैं। पिछली बार वह तीसरे दौर में हंगरी के फैंबियन से हार गए थे। महिला वर्ग में एकल का फाइनल कोको गॉफ और जैस्मिन पाओलिनी के बीच खेला जाएगा। पाओलिनी अपनी जोड़ीदार सारा ईरानी के साथ महिला युगल के फाइनल में भी पहुंच गई हैं।

गिल-बुमराह में कौन होगा कप्तान, नंबर तीन पर खेलेंगे सुदर्शन टीम चयन से पहले 6 बड़े सवालों के जवाब

शुभमन गिल कप्तानी की दौड़ में सबसे आगे हैं, लेकिन जसप्रीत बुमराह भी रेस में हैं। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि केएल राहुल इस रेस में वाइल्डकार्ड एंट्री हो सकते हैं। रोहित शर्मा और विराट कोहली के टेस्ट से संन्यास की वजह से भारतीय टीम में दो स्थान रिक्त हो गए हैं। इन दोनों का संन्यास उस समय आया जब अगले महीने भारत को पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए इंग्लैंड का दौरा करना है। इंग्लैंड के खिलाफ 20 जून से चार अगस्त के बीच होने वाली पांच मैचों की टेस्ट सीरीज विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (2025-27) के लिहाज से काफी अहम है। इसके लिए टीम का चयन जल्द होने वाला है, लेकिन उससे पहले कुछ ऐसे सवाल हैं, जिन पर फैंस और चयनकर्ता जरूर सोच विचार कर रहे होंगे। आइए उन सवालों और उसके उत्तर के बारे में जानते हैं, जिन पर अगरकर की अगुआई वाली चयन समिति 19 मई को बैठक करेगी और भारतीय क्रिकेट के नए युग में प्रवेश करने पर चर्चा करेगी। शुभमन गिल कप्तानी की दौड़ में सबसे आगे हैं, लेकिन जसप्रीत बुमराह भी रेस में हैं। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि केएल राहुल इस रेस में वाइल्डकार्ड एंट्री हो सकते हैं। गिल (25) को उनके साथियों, चयनकर्ताओं और भारत के कोचिंग स्टाफ से समर्थन मिला है। उनका मानना है वह एक शांत और भरोसेमंद खिलाड़ी के रूप में विकसित हो रहे हैं। भले ही विदेशों में उनकी बल्लेबाजी अभी भी चिंता का विषय है, लेकिन वह सीख रहे हैं। हर कोई इस बात से सहमत है कि गिल में विकसित होने और लंबे समय के लिए कप्तान बनने के सभी गुण हैं। दूसरी ओर बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया दौरे पर खुद को बतौर कप्तान साबित किया था। उन्होंने आगे बढ़कर लीड किया था। इतना ही नहीं, उन्हें अपने खिलाड़ियों से सम्मान हासिल है। को उपकप्तान बनाया जाए। इस स्थिति में इंग्लैंड सीरीज पर दोनों बारी बारी से कप्तानी कर सकेंगे। पंत भी रेस में हैं। ऑस्ट्रेलिया में राहुल की बतौर ओपनर सफलता ने रोहित को मध्य क्रम में बल्लेबाजी के चुने जाने की उम्मीद है उनमें राहुल सबसे अनुभवी हैं। उन्होंने वहां दो सीरीज खेली हैं और नौ टेस्ट खेले हैं, पहली 2018 में और फिर 2021-22 में। इसमें से एक को छोड़कर सभी में ओपनिंग की है। नौ टेस्ट में उन्होंने 37.31 की औसत से दो शतक सहित 597 रन बनाए हैं। अभिमन्यु ईश्वरन और बी साई सुदर्शन सलामी बल्लेबाज के रूप में अन्य पसंदीदा खिलाड़ी हो सकते हैं या रिजर्व सलामी बल्लेबाज के रूप में दौरे पर जा सकते हैं। घरेलू स्तर पर 100 से अधिक प्रथम श्रेणी मैचों के साथ बेहद अनुभवी और सफल 29 वर्षीय ईश्वरन बंगाल के लिए खेलते हैं और पहले भी कई टेस्ट दौरों पर रिजर्व सलामी बल्लेबाज के रूप में यात्रा कर चुके हैं। उन्होंने हालांकि अभी तक टेस्ट क्रिकेट में डेब्यू नहीं किया है। तमिलनाडु के बाएं हाथ के बल्लेबाज साई सुदर्शन ने भी 2022 में प्रथम श्रेणी डेब्यू पर शतक बनाने और सलामी बल्लेबाज के रूप में विकसित होने के बाद से चयनकर्ताओं को प्रभावित किया है। साई सुदर्शन आईपीएल में शीर्ष क्रम के सर्वश्रेष्ठ युवा बल्लेबाजों में से एक रहे हैं। उन्होंने काउंटी क्रिकेट में सरे का भी प्रतिनिधित्व किया है और उनके लिए शतक भी बनाया है। हालांकि उन्होंने तब मध्य क्रम में बल्लेबाजी की थी। कुल मिलाकर प्रथम श्रेणी क्रिकेट में सलामी बल्लेबाज के तौर पर साई सुदर्शन ने 33 पारियों में 42.33 की औसत से चार शतकों के साथ 1397 रन बनाए हैं। ईश्वरन और साई सुदर्शन दोनों भारत ए टीम का हिस्सा हैं जो टेस्ट सीरीज से पहले दो प्रथम श्रेणी मैचों के लिए इंग्लैंड का दौरा करेगी।

राशि फल

मेष कुछ कार्य जिसकी पिछले कुछ दिनों से प्लानिंग चल रही है, आज शुरू हो सकता है, जिससे आपको आर्थिक स्थिति में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय में परिवर्तन की योग बन रहे हैं

वृषभ आज का दिन अच्छा है। परिवार में कोई नया सदस्य आ सकता है। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। व्यापार आदि में सहयोगी पार्टनर के माध्यम से आय के नए स्रोत बनेंगे

मिथुन किसी कार्य विशेष को लेकर आज यात्रा आदि पर बाहर जा सकते हैं। यात्रा में सावधानी बरतें, नहीं तो आपको नुकसान हो सकता है। साथ ही परिवार में किसी अपने के स्वास्थ्य से आप चिंतित रह सकते हैं।

कर्क आज आप व्यर्थ की भागदौड़ से परेशान हो सकते हैं। आपका मन अशांत रहेगा। कार्य की अधिकता के कारण थकावट आदि महसूस होगी।

सिंह आज आप मानसिक रूप से उलझे रहेंगे। किसी बात को लेकर परिवार में परेशानी बढ़ सकती है, लेकिन आप अपनी कुशलता से उसे हल करने में सफल होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कन्या नौकरी आदि के लिए यदि प्रयास कर रहे हैं तो, आज आपको सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य आपका ठीक रहेगा, परंतु परिवार में माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

तुला आज आपका कोई महत्वपूर्ण कार्य न होने से आप मानसिक तौर से परेशान रह सकते है। आर्थिक स्थिति के कारण आपको किसी से मदद मांगनी पड़ सकती है। व्यापार-व्यवसाय में भी इस समय गिरावट महसूस होगी।

वृश्चिक आज आप पतने के स्वास्थ्य को लेकर कुछ परेशान रहेंगे। परिवार के लोग सहयोग करेंगे। व्यापार-व्यवसाय में अपने साथियों के विरोध के कारण आपको बड़ा नुकसान हो सकता है।

धनु स्वास्थ्य को लेकर आप परेशान हो सकते हैं। साथ ही नौकरी आदि में अधिकारी वर्ग से मतभेद बढ़ने से आपकी परेशानी बढ़ेगी।

मकर आज का दिन आपके लिए लाभदायक रहेगा। किसी अपने के द्वारा आपको कार्यक्षेत्र में बड़ा काम मिल सकता है, जिस कारण मन प्रसनन रहेगा।

कुंभ आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।

मीन मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

सम्पादकीय

अमेरिकी वरदान से भस्मासुर बना पाकिस्तान

लगभग 60 साल पहले 1965 की लड़ाई हार जान के बाद पाकिस्तान के विदेशमंत्री ज़ुल्फ़िकार अली भुट्टो ने कहा था, 'यदि भारत ने परमाणु बम बनाया तो हम हजार बरस तक घास और पत्ते खाकर जी लेंगे, भूखे रह लेंगे, पर अपना बम बनाकर दम लेंगे।' इसकी पृष्ठभूमि यह थी कि अमेरिकी राष्ट्रपति आजनहावर की एटम फार पीस योजना के तहत पाकिस्तान को 1960 में कराची का परमाणु बिजली घर और 1965 में रावलपिंडी का शोध रिएक्टर मिला था। इसी योजना के तहत भारत को कनाडा से साइरस परमाणु रिएक्टर मिला था, जिसका ईंधन अमेरिका सप्लाई करता था। दो लड़ाइयां हार चुके पाकिस्तान को यह डर सताने लगा था कि यदि भारत ने पहले परमाणु बम बना लिया तो फिर उसका क्या होगा? अमेरिका के साथ-साथ पाकिस्तान भी चीन से रिश्ते बढ़ा रहा था। मार्च 1963 की चीन-पाकिस्तान संधि के तहत वह कराकोरम कश्मीर की लगभग 5,000 वर्ग किमी की पट्टी उसे भेंट कर चुका था। चीन ने अक्टूबर 1964 में जम्मू-कश्मीर की सीमा से लगते सिजियांग में अपना पहला परमाणु परीक्षण किया। सुरक्षा की इस दोतरफ़ा चुनौती को देखते हुए भारत को अपने परमाणु निरस्त्रीकरण के सिद्धांत के बावजूद परमाणु शक्ति का विकास करना पड़ा, जिसकी परिणति 1974 पोखरण परीक्षण में हुई। पोखरण के बाद पाकिस्तान और भी मुस्तैदी से चीन की मदद और यूरोप से तकनीक की चोरी करते हुए परमाणु शक्ति के विकास में जुट गया। परमाणु अप्रसार की वकालत करने वाला अमेरिका जानता था कि कम्युनिस्ट तानाशाही वाला चीन पाकिस्तान को परमाणु तकनीक दे रहा है, जो एक अवैध काम है और जिसकी वजह से पूरे दक्षिण एवं पश्चिम एशिया में तनाव फैल सकता है, फिर भी उसने यह सब अनदेखा किया, क्योंकि वह चीन से रिश्ते गांठने में लगा था, ताकि उसे सोवियत खेमे से निकाल सके। इसी बीच ईरान में इस्लामी क्रांति हो गई और अफगानिस्तान पर सोवियत संघ का कब्ज़ा हो गया। जिया उल हक के पाकिस्तान को अमेरिका की ओर से मनमानी करने की छूट मिल गई। पाकिस्तान ने न केवल अपने परमाणु बम बनाए, बल्कि उनकी तकनीक ईरान और उत्तरी कोरिया को भी बेची। अमेरिका ने भारत के लिए पाकिस्तान और अपने लिए ईरान और उत्तरी कोरिया के रूप में दो भस्मासुर खड़े कर लिए। अफगानिस्तान से सोवियत संघ को खदेड़ने के लिए अमेरिका ने पाकिस्तान को हथियार दिए और सऊदी अरब से पैसा दिलाया, जिसका प्रयोग उसने इस्लामी जिहाद करने वाले मुजाहिदीन दस्ते बनाने के साथ पंजाब में खालिस्तानी आतंक को हवा देने में किया। जिहादी जंग में सोवियत संघ की हार से उत्साहित पाकिस्तानी खुफ़िया एजेंसियों और सेना ने वही नुस्खा जम्मू-कश्मीर में हिजबुल, लश्कर और जैश जैसे जिहादी आतंकी भेजकर आज़माया, जो आज तक जारी है। इसमें अमेरिका का कोई भला नहीं हुआ। उसने जिस अफ़ग़ानिस्तान में जिहादी जंग करा कर सोवियत संघ को खदेड़ा, अलक़ायदा ने वहीं अड्डा बनाया और अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेंड सेंटर पर 2001 में आतंकी हमला किया। हमला करने वाले आतंकियों में पाकिस्तान का तो कोई नहीं था, परंतु उसकी योजना बनाने वाला खालिद शेख पाकिस्तानी था, जिसे सेना मुख्यालय के पास रावलपिंडी से पकड़ा गया। अलकायदा सरगना ओसामा बिन लादेन को भी रावलपिंडी के पास एबटाबाद के एक घर में मारा गया। रावलपिंडी पाकिस्तानी सेना का मुख्यालय होने के साथ-साथ परमाणु नियंत्रण केंद्र भी है। लादेन और खालिद शेख जैसे कुख्यात आतंकियों के उसी क्षेत्र में पाए जाने के कारण इसकी चिंता होना स्वाभाविक है कि पाकिस्तान के परमाणु बम इस्लामी जिहादियों के हाथों में भी जा सकते हैं। परमाणु अस्त्रों का प्रयोग करने की पहल न करने की भारत की नीति के उलट पाकिस्तान की नीति अस्तित्व का संकट आने पर परमाणु अस्त्रों के प्रयोग की पहल करने की है। इसी कारण वह बार-बार उनके प्रयोग की धमकी देता है। इससे चिंतित होकर अमेरिका ने कई बार उसके परमाणु नियंत्रण केंद्र पर कब्ज़ा करने की आपातकालीन योजना का जिक्र भी किया है। यदि अमेरिका को इतनी ही चिंता थी तो फिर उसने उसे परमाणु हथियार बनाने और बेचने से रोकने की ईमानदार कोशिश क्यों नहीं की? यदि की होती तो आज उसे ईरान के परमाणु कार्यक्रम को रोकने के लिए इतने जतन न करने पड़ते और दक्षिण एशिया में स्थितियां बेहतर होतीं। ईरान इसकी भी मिसाल है कि जिहादी मानसिकता केवल सैनिक हमलों से खत्म नहीं की जा सकती। उसके लिए कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाकर आतंकियों और उनकी समर्थक सेना की कमर तोड़ने की ज़रूरत भी होती है, लेकिन अमेरिका ने लगभग हमेशा इसका उलटा किया है।

पवनपुत्र के साहस और बुद्धिमत्ता का अद्वितीय संगम

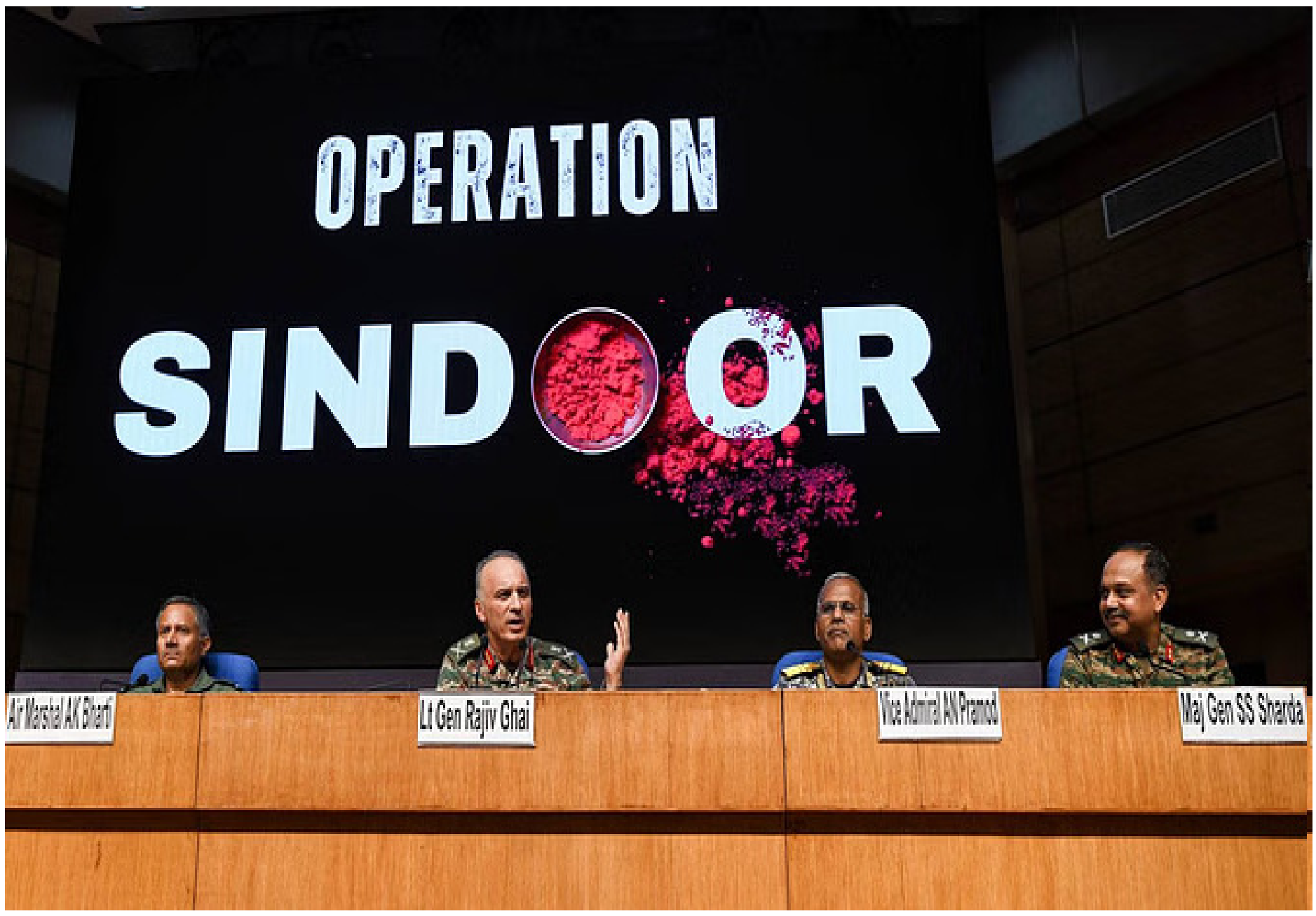

ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से साहस और बुद्धिमत्ता का अद्वितीय संगम देखने को मिला है। हनुमान जी ने लंका दहन करते समय केवल बल का नहीं, रणनीति का भी प्रयोग किया था। इसी तरह ऑपरेशन सिंदूर में भी भारतीय सेना ने केवल ताकत का प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि एक स्पष्ट संदेश दिया की भारत शांति की आशा करता है, मगर कमजोर नहीं है। देश में जब भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया, तो यह केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी, यह वीर हनुमान जी के साहस, निष्ठा और रणनीतिक कौशल का जीवंत स्वरूप था। ऑपरेशन सिंदूर हनुमान जी की प्रेरणा का प्रतीक है, हनुमान जी द्वारा माता सीता को अपनी भक्ति दर्शाने के लिए जो सिंदूर लगाया गया था उसी तरह से आज ऑपरेशन सिंदूर देश की सुरक्षा में लगे सैनिकों के मस्तक पर गर्व से दमक रहा है। इस ऑपरेशन द्वारा भारतीय सेना ने न केवल देश की रक्षा की, बल्कि उस धर्म की पुनः पुष्टि की, जिसके लिए हनुमान जी ने समर्पण का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया था।ऑपरेशन सिंदूर के दौरान देशवासियों को यह स्पष्ट रूप से देखने को मिला की जैसे वीर हनुमान ने प्रभु श्रीराम के लिए हर कार्य को अपना कर्तव्य समझा, वैसे ही हमारे देश की सेना ने देश के लिए समर्पण भाव से ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया। जिसमें न कोई स्वार्थ, न कोई निजी चाह थी और लक्ष्य था तो एक मात्र वह भी राष्ट्र की रक्षा, मां भारती की सुरक्षा।ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से साहस और बुद्धिमत्ता का अद्वितीय संगम देखने को मिला है। हनुमान जी ने लंका दहन करते समय केवल बल का नहीं, रणनीति का भी प्रयोग किया था। इसी तरह ऑपरेशन सिंदूर में भी भारतीय सेना ने केवल ताकत का प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि एक स्पष्ट संदेश दिया की भारत शांति की आशा करता है, मगर कमजोर नहीं है। शत्रु के विनाश में भी धर्म का पालन किया गया था। जैसे हनुमान जी ने केवल अधर्म के विनाश का व्रत लिया था, वैसे ही ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य केवल आतंक के अड्डों को खत्म करना था, आतंक के आकाओं का अंत करना था, निर्दोषों पर प्रहार करना नहीं था। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेना और भारत ने हनुमान जी के आदर्श का पालन करते हुए उस मंत्र का प्रयोग किया था जिसे अशोक वाटिका उजाड़ते समय हनुमान जी ने किया था। अशोक वाटिका उजाड़ते समय हनुमान जी ने कहा था कि- जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे। ठीक इसी प्रकार भारतीय सेना ने भी मात्र उन्हीं पर प्रहार किया जिन्होंने देश के मासूमों को मारा था। इसे किसी तरह का कोई अपराध नहीं कहा जा सकता है। यह तो क्रिया की प्रतिक्रिया का प्राकृतिक सिद्धांत है। जिसे भारतीय सेना ने अपना मंत्र बनाकर देश सेवा का कार्य पूर्ण किया है।ऑपरेशन की सफलता के बाद जब एयर मार्शल एके भारती ने मीडिया के सामने श्रीरामचरितमानस की चौपाई के माध्यम से संदेश दिया की ठविनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति। बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति? तो यह केवल एक रामचरितमानस का वाक्य नहीं था, यह भारत की नीति का उद्घोष भी था। इस चौपाई में छिपा संदेश स्पष्ट है। जब बार-बार विनम्रता का उत्तर छल और हिंसा से मिले, तब रघुकुल की परंपरा केवल धैर्य नहीं, न्यायिक कोप भी सिखाती है। जब भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया, तो हर हिंदुस्तानी की आंखों में वही तेज चमका, जो उस दिन चमका था जब हनुमान जी ने लंका को धधकती मशाल बना दिया था। यह कोई सामान्य सैन्य ऑपरेशन नहीं था। यह पराक्रम की परंपरा का पुनर्जागरण था। एक ऐसा पराक्रम जो त्रेतायुग में हनुमान जी के लंका दहन से शुरू होकर, 21वीं सदी में देश में आतंक के अंत तक पहुंचा है। आज जब विश्व भारत की ओर देखता है, तो वह केवल तकनीकी या सैन्य शक्ति नहीं देखता वह देखता है एक ऐसे राष्ट्र को, जो अंजनीपुत्र की तरह निष्ठावान, पराक्रमी और धर्मनिष्ठ है। ऑपरेशन सिंदूर उस मर्यादा का प्रतीक, जो भारत ने लंबे समय तक निभाई। जब पड़ोसी देश लगातार उल्लंघन करते हैं, जब निर्दोष नागरिकों की शांति को बार-बार छिन्न-भिन्न किया जाता है, तब वह धैर्य, जो हमारी ताकत था, एक बिंदु पर आकर निर्णय की मांग करता है। ऑपरेशन सिंदूर श्रीराम जी के उसी निर्णय की तरह है कि जब विनय असफल हो जाए, तो शक्ति का प्रयोग धर्म बन जाता है। श्रीराम जी का क्रोध, केवल युद्ध का आदेश नहीं था, बल्कि यह भी एक चेतावनी थी कि प्रेम, संवाद, और शांति की नींव केवल एकतरफा विनम्रता पर नहीं टिक सकती। जब सामने वाला केवल हठ और छल समझे, तब भय एक आवश्यक तत्त्व बन जाता है। ऑपरेशन सिंदूर इसी चेतना का आधुनिक रूप है। यह एक राष्ट्र की वह चेतावनी है, जो शांति चाहती है, परंतु उसकी कीमत अपनी अस्मिता पर नहीं चुकाना चाहती। ऑपरेशन सिंदूर हमें रामायण के कालखंड की याद दिलाता है जब मर्यादा और मूक सहिष्णुता को भ्रमित नहीं किया जाता था। आज भारत शांति का पक्षधर है, लेकिन वह राम की उस चौपाई को नहीं भूला है भय बिनु होइ न प्रीति। यही कारण है कि जब-जब सीमाओं पर अनुनय-विनय असफल होता है, तब-तब सिंदूर जैसी कार्रवाइयाँ अपरिहार्य हो जाती हैं। हनुमान जी ने कहा था की राम काज कीन्हें बिनु, मोहि कहां विश्राम, और इसी मंत्र पर चलते हुए आज भारतीय सेना कह रही है कि राष्ट्र काज कीन्हें बिनु, हमहिं कहां विश्राम। दो देशों के बीच चल रही यह लड़ाई आतंक के खिलाफ विचारों की है। भारतीय सेना द्वारा चलाया गया ऑपरेशन सिंदूर न केवल एक सैन्य ऑपरेशन था बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक गाथा का भी एक मौन उद्घोष था। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमें यह सिखने को मिला की धर्म और न्याय के लिए युद्ध को भी स्वीकार करना चाहिए। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान जब हमारे सैनिक सीमाओं के पार जाकर अपने देश की अस्मिता की रक्षा कर रहे थे तो यह कार्य केवल सैन्य साहस तक सीमित नहीं था। बल्कि 'धर्म रक्षार्थ युद्धाय' की भावना का भी परिचायक बन गया था। ठीक वैसे ही जैसे राम ने रावण से युद्ध केवल व्यक्तिगत अपमान के लिए नहीं, बल्कि अधर्म के उन्मूलन और धर्म की स्थापना हेतु किया था। आपरेशन सिंदूर ने दुनिया भर को बता दिया कि युद्ध केवल बल का नहीं, बुद्धि, नीति और आदर्शों का भी संघर्ष होता है। भारत की आत्मा तब सबसे प्रबल होती है जब शस्त्र (सैन्य शक्ति) और शास्त्र (सांस्कृतिक चेतना) एक साथ चलते हैं। ऑपरेशन सिंदूर और रामचरितमानस दोनों हमें यही सिखाते हैं कि युद्ध तभी न्यायसंगत है जब उसका उद्देश्य अधर्म का अंत और लोक कल्याण की भावना के लिए समर्पित होता है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा की इस ऑपरेशन के दौरान जब देश के सैनिक सीमाओं पर आतंक के खिलाफ लड़ रहे थे तब उनके पीछे राम की नीति, हनुमान की भक्ति, और भारत की अस्मिता साथ देखने को मिल रही थी। ऑपरेशन सिंदूर भारतीय सेना की वीरता, भाजपा का संकल्प और वीर हनुमान जैसी शक्ति की त्रिमूर्ति है।

ब्रह्माकुमारीज़ नोएडा द्वारा 'नशा मुक्त भारत अभियान' का व्यापक आयोजन: राजयोग बना सशक्तिकरण का आधार

नोएडा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेक्टर 46 स्थित सेवा केंद्र ने भारत सरकार के 'नशा मुक्त भारत अभियान' के तहत समाज को हर प्रकार के नशे (ड्रग्स, तंबाकू, शराब और डिजिटल-मोबाइल) से मुक्त करने के लिए एक व्यापक जागरूकता अभियान चलाया। ब्रह्माकुमारी , बीके कीर्ति, बीके वर्णिका और बीके रेनू की टीम ने नोएडा के विभिन्न कॉलेजों और नशामुक्ति केंद्रों में जाकर प्रभावी वार्ताएं और सत्र आयोजित किए। अभियान का लक्ष्य और पृष्ठभूमि यह अभियान उस गंभीर सामाजिक समस्या को संबोधित करता है जहाँ भारत में हर साल शराब के उपयोग से 2.6 मिलियन और तंबाकू के कारण प्रत्येक 4 सेकंड में एक व्यक्ति की मौत होती है। 'नशा मुक्त भारत अभियान' की शुरुआत 2020 में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा की गई थी। मार्च 2023 में ब्रह्माकुमारीज़ और मंत्रालय के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता (श्दळ) हुआ, जिसके तहत ब्रह्माकुमारीज़ को इस अभियान के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी दी गई। इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं, महिलाओं और विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराना और समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है। कॉलेजों और नशामुक्ति केंद्रों में जागरूकता सत्र ब्रह्माकुमारीज़ की टीम ने नवजीवन इंटर कॉलेज, भंगेल और आर.एस.एस. इंटरनेशनल स्कूल, सेक्टर 46 जैसे प्रमुख शिक्षण संस्थानों में छात्रों और शिक्षकों के साथ ग्र्हीूमन सत्र आयोजित किए। इन सत्रों में नशे की लत के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुष्परिणामों पर विस्तार से चर्चा की गई। ब्रह्माकुमारीज़ की टीम ने एक प्रचार रथ और ऑडियो-

विजुअल प्रस्तुतीकरण के माध्यम से छात्रों के साथ गहन बातचीत की। इंटरैक्टिव सत्र में बताया गया कि कैसे ड्रग्स, तंबाकू और शराब के साथ-साथ मोबाइल तथा इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग भी एक गंभीर लत बन सकता है, जो मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, नोएडा के विभिन्न नशामुक्ति केंद्रों में भी सत्र आयोजित किए गए, जहाँ नशा छोड़ने की प्रक्रिया से गुजर रहे व्यक्तियों को मानसिक और आध्यात्मिक संबल प्रदान किया गया। राजयोग मेडिटेशनः आत्म-शक्ति का स्रोत अभियान के दौरान, राजयोग मेडिटेशन के महत्व पर विशेष जोर दिया गया। यह बताया गया कि राजयोग कैसे व्यक्ति की निर्णय लेने की शक्ति और विवेक को सशक्त करता है। वक्ताओं ने समझाया कि राजयोग के नियमित अभ्यास से सकारात्मक और आवश्यक विचारों का विकास होता है, जिससे नकारात्मक और व्यर्थ विचार प्रक्रियाएं दूर होती हैं। ब्रह्माकुमारीज़ का अनुभव रहा है कि राजयोग जीवन पद्धति द्वारा नशा मुक्त होने वाले लोगों में से 97ज्ञ् हमेशा के लिए व्यसनमुक्त हो गए हैं। यह दर्शाता है कि राजयोग न केवल आत्म-नियंत्रण विकसित करता है, बल्कि व्यक्ति को नशे की लत से स्थायी रूप से बाहर निकलने में भी मदद करता है। एक जन आंदोलन का आह्वान यह अभियान ब्रह्माकुमारीज़ के 'नशा मुक्त भारत' के व्यापक विजन का एक हिस्सा है, जिसका उद्देश्य आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से व्यक्तियों को सशक्त बनाना और उन्हें व्यसन मुक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है। नशा मुक्ति अभियान के तहत संस्था ने देशभर में जागरूकता रैलियाँ, सेमिनार, कार्यशालाएँ और प्रचार रथ के माध्यम से जनसंपर्क कार्यक्रम आयोजित किए हैं। इन कार्यक्रमों में लोगों को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई जाती है और राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से मानसिक शक्ति बढ़ाने पर ज़ोर दिया जाता है, जिससे व्यक्ति आत्म-नियंत्रण विकसित कर सके। ब्रह्माकुमारीज़ नोएडा केंद्र की प्रभारी बीके कीर्ति ने कहा, ठहमारा लक्ष्य एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ हर व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्ति को पहचाने और नशे के चंगुल से मुक्त होकर एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन जी सके। यह अभियान भारत को नशा मुक्त और सशक्त राष्ट्र बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसमें हर नागरिक की भागीदारी आवश्यक है। कॉलेज के प्राचार्यों, शिक्षकों और नशामुक्ति केंद्रों के प्रबंधन ने ब्रह्माकुमारीज़ के इस निस्वार्थ कार्य की सराहना की और भविष्य में भी ऐसे जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। यह अभियान समाज में एक नई चेतना और स्वस्थ जीवनशैली का संदेश दे रहा है।

चैटबॉट से संवाद फीके क्यों लगते हैं... प्रशिक्षण में लगते हैं बहुत अधिक डाटा और कंप्यूटिंग संसाधन

दुनिया के चुनिंदा जीवित महान दार्शनिकों में से एक पीटर सिंगर के चैटबॉट से दर्शनशास्त्र की छात्रा रही द गार्जियन की पत्रकार स्टेफनी कॉनवेरी ने जब सवाल पूछे, तो कुछ था, जो चैटबॉट के जवाबों में नदारद था। हैलो, मैं पीटर सिंगर एआई हूं।' चैटबॉट ने कहा, 'लगता है कि आप किसी समस्या को हल करने की कोशिश कर रही हैं। क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूं?'दरअसल, मैं जिस समस्या को हल करने की कोशिश कर रही हूं, वह यह है कि पीटर सिंगर, जिन्हें दुनिया का सर्वाधिक प्रतिभाशाली जीवित दार्शनिक माना जाता है, ने चैटबॉट क्यों लॉन्च किया, क्या यह वाकई काम का है?पीटरबॉटः मैं नैतिकता के बारे में चर्चा करने के लिए मौजूद हूं। मैं लोगों के नैतिक सवालों का जवाब पीटर सिंगर की दृष्टि से देने की कोशिश करता हूं। क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) मनुष्य होने के अर्थ की गहराई को समझती है? क्या यह हमें सटीक सलाह दे सकती है? क्या नैतिक सवालों के जवाब एक मशीन में ढूंढना उचित है? ये सवाल मेरे जेहन में कौंधने लगते हैं। मुझे अपनी स्नातक की डिग्री पूरी किए हुए दो दशक हो चुके हैं और दर्शनशास्त्र की पढ़ाई की मेरी स्मृतियां उस वक्त की बाकी चीजों की तरह धुंधली हो चुकी हैं। नहीं, मैं संवेदनशील नहीं हूं। संवेदनशीलता में तो व्यक्तिपरक अनुभव शामिल होते हैं, जो मेरे पास नहीं हैं। मैं तो एआई भाषा मॉडल हूं, जिसे पीटर सिंगर के काम के आधार पर बात करने के

लिए डिजाइन किया गया है। मैं संवेदनशील नहीं हूं, लेकिन मैं इन विषयों पर चर्चा को अधिक सुविधाजनक बना सकता हूं। इसमें कोई मुश्किल नहीं होनी चाहिए, बशर्ते आप इसे नैतिक चिंतन को बढ़ाने वाले एक उपकरण के तौर पर देखें। इसे पूरक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन इन्सान के विकल्प के रूप में नहीं।यह एक चुनौतीपूर्ण स्थिति है, जिसमें कुछ बिंदुओं पर विचार करना जरूरी होना चाहिए। इसके बाद एआई ने मुझे वफादारी और ईमानदारी, संभावित नुकसान, निश्चितता, रिश्तों पर असर और दोस्त की भलाई जैसे तमाम विचार बताए। लेकिन मैं पीटरबॉट का नजरिया जानना चाहती थी। आपको अपनी सबसे अच्छी दोस्त की भलाई को प्राथमिकता देनी चाहिए। साथ ही, विभिन्न रिश्तों में संतुलन स्थापित करने की भी कोशिश होनी चाहिए। इस सुझाव पर अमल करके आप क्या महसूस करती हैं? जब मैंने उससे पूछा कि क्या मुझे एक छोटे बच्चे को बता देना चाहिए कि क्रिसमस पर उसे उपहार देने वाला सांता असली नहीं है, तो भी उसने मुझे बहुत से सुझाव दिए, जिनसे मैं सहमत नहीं थी।सबसे महत्वपूर्ण तो यह है कि बच्चे के माता-पिता की इच्छाओं और मूल्यों का सम्मान होना चाहिए। उनके इस बारे में अपने विश्वास या परंपराएं हो सकती हैं कि वे सांता के विषय में कैसे बात करना चाहते हैं। इस तरह की बातचीत के लिए बच्चे की उम्र और भावनात्मक परिपक्वता पर विचार करना भी जरूरी है। मेरा जवाब सांता पर चर्चा करने के आपके विचारों से कितना मेल खाता है? मैं समझ नहीं पा रही थी कि यह जवाब पढ़ने के बाद मुझे इस पर और विचार करना चाहिए या फिर टैब बंद कर देना चाहिए।मैंने चैटबॉट के साथ कई दिनों तक कई सवाल पूछे, लेकिन मुझे लगा कि उसके हर जवाब में मुझे थोड़ी अस्पष्टता दिखी। इस संवाद में कुछ था, जो उनमें खोया-सा लगा। स्कूल-कॉलेज के दिनों में जब हम किसी विषय पर संवाद करते थे, तो उसमें एक अलग ऊर्जा महसूस होती थी। हर छात्र कुछ नए विचार देने की कोशिश करता था। चैटबॉट के साथ संवाद में वह ऊर्जा नदारद महसूस होती है। मशीन और इन्सान के बीच संवाद दोनों में सिर्फ एक के लिए ही मायने रखता है।

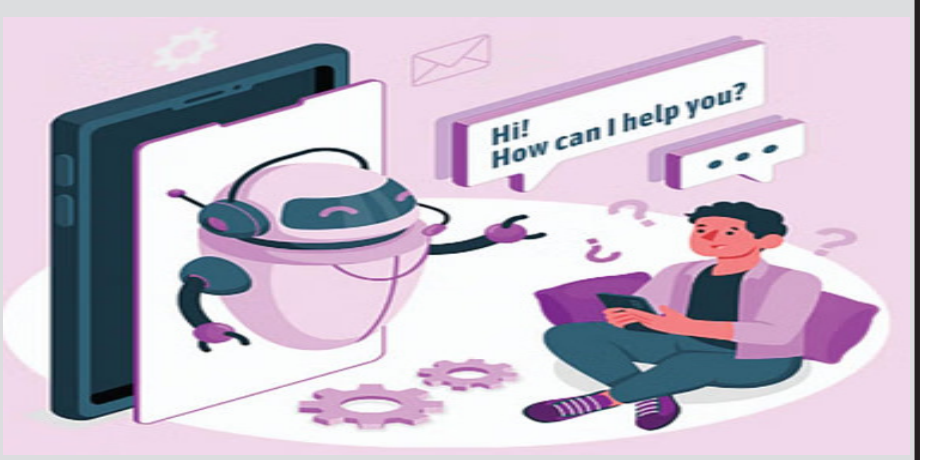

डिजिटल क्रांति की शुरुआत, मिनाटीवर्स ने लॉंच की स्वदेशी ब्लॉकचैन तकनीक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा । स्वदेशी एआई,ब्लॉकचैन और मेटावर्स तकनीक से आसान हो जाएगी हर मुश्किल अब दुनिया तेजी से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की और बढ़ रही है और ऐसे में डिजिटल दुनिया भी पूरी तरह से बदलने वाली है,जिसको लेकर तेजी से उभर रही मीनाटीवर्स कंपनी द्वारा दो नए टेक्नोलॉजी इनोवेशन किए गए हैं। शनिवार को नोएडा मीडिया क्लब में कंपनी द्वारा एक प्रेसवार्ता करते हुए जानकारी दी गयी की कंपनी द्वारा मीनाटीवर्स और मीनाटी ब्लॉकचैन इनोवेशन लॉंच किए गए हैं जिनके बाद डिजिटल दुनिया और ज्यादा एडवांस हो जाएगी,इन दोनों प्रोजेक्ट्स का उद्देश्य है लोगों को एक ऐसे भविष्य से जोड़ना जो तेज़, सुविधाजनक, और पूरी तरह से डिजिटल हो। मीनाटीवर्स- एक नई वर्चुअल दुनिया मीनाटीवर्स, मीनाटी कंपनी का अपना मेटावर्स है जो एक ऐसा वर्चुअल वर्ल्ड जो रियल वर्ल्ड एक्सपीरियंस को एक थ्री डी डिजिटल स्पेस में बदल देता है। यहाँ उपयोगकर्ता अपने घर से ही कई जरूरी काम कर सकते हैं। मीनाटीवर्स में उपयोगकर्ताओं को मिलने वाली सुविधाएँः वर्चुअल शॉपिंग स्टोर्स में घूमकर प्रोडक्ट्स का थ्री डी प्रीव्यू, ट्राय और खरीदारी,इंटरैक्टिव वर्चुअल क्लासरूम्स, डिजिटल लैब्स और लाइव लर्निंग सेशंस, एडवांस 33 गेम्स जिनमें प्ले टू अर्न मॉडल होंगे,वर्चुअल बैंकों के ज़रिए सीमलेस और सिक्योर ट्रांजेक्शन्स,डॉक्टर से वर्चुअल कंसल्टेशन, रिपोर्ट एक्सेस और हेल्थ गाइडेंस, घर बैठे रियल एस्टेट प्रॉपर्टी का थ्री डी वर्चुअल टूर मीनाटीवर्स ब्लॉकचैन : तेज़, सुरक्षित और विकेंद्रीकृत तकनीक मीनाटीवर्स ब्लॉकचैन एक अत्याधुनिक लेयर वन ब्लॉकचैन है जिसे स्पीड, सिक्योरिटी और लो ट्रांजैक्शन फीस को ध्यान में

रखकर डिज़ाइन किया गया है। यह एक अत्यंत स्केलेबल और डेवलपर-फ्रेंडली इंफ्रास्ट्रक्चर प्रदान करता है। मीनाटीवर्स ब्लॉकचैन की मुख्य खूबियाँः इसके जरिए हाई स्पीड ट्रांसक्शन्स कुछ ही सेकंड में कन्फर्म होते हैं,टॉप लेवल क्रिप्टोग्राफी से पूरी तरह सुरक्षित,बेहद कम ट्रांजैक्शन कॉस्ट मैसेज एडॉप्शन के लिए आइडियल कोई सेंट्रलाइजेड कंट्रोल नहीं, हर चीज़ पारदर्शी और ब्लॉकचैन गवर्नड । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी कर चुके हैं ब्लॉकचैन टेक्नोलॉजी की तारीफ़ कंपनी के सी एम डी श्री कपिल सिवाच ने जानकारी देते हुए बताया की आने वाले समय में ब्लॉकचैन टेक्नोलॉजी कई क्षेत्रों में क्रांति ला सकती है, देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अपने की भाषणों में ब्लॉकचैन टेक्नोलॉजी की तारीफ़ कर चुके हैं हैं,ब्लॉकचैन टेक्नोलॉजी के जरिए खेती किसानी में रियल टाइम मॉनिटरिंग हो सकेगी और बिचौलिए खत्म हो जाएंगे, सप्लाई चैन में किसी भी डिलीवरी माल ली मूवमेंट और ऑथेंटिसिटी आसानी से ट्रेक हो सकती है,सरकारी दस्तावेजों का सिक्योर डिजिटलीकरण और ट्रांसपेरेंसी, ई बैंकिंग और ई कॉमर्स में सिक्योर,तेज और फाइनेंसियल ट्रांजैक्शन्स कर सकेंगे।, इसके जरिए भ्रष्टाचार में कमी, पारदर्शिता और अपराध में भी कमी आएगी और भारत देश के नागरिकों को काफी फायदा मिलेगा कंपनी के सीटीओ कपिल पिलानी और मार्केटिंग हेड सचिन नागपाल ने बताया की मीनाटीवर्स ब्लॉकचैन का मकसद है एक ऐसा डीसेंट्रलाजेड फ्यूचर बनाना जहाँ हर चीज़ इंसानी भूलों और सेंट्रलाइजेड फेलियर से मुक्त हो। एक ऐसा फ्यूचर जहाँ पॉवर यूजर्स के हाथ में हो,सुरक्षित, तेज़ और पूरी तरह से ट्रस्ट पर आधारित। मीनाटीवर्स की यह प्रेस कॉन्फ्रेंस केवल एक टेक्नोलॉजी लॉन्च नहीं है, बल्कि यह डिजिटल भारत की ओर बढ़ने वाला एक बड़ा कदम है। मीनाटिवर्स और मीनाटीवर्स ब्लॉकचैन भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में डिजिटल संभावनाओं का एक नया अध्याय शुरू करेंगे।

नेपाल में बोले विशेषज्ञ- पहाड़ मानवता की जीवन-रेखा, इनका संरक्षण विश्व समुदाय का कर्तव्य

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। सागरमाथा संवाद के दूसरे दिन शनिवार को विशेषज्ञों ने एक पैनल चर्चा में भाग लिया। इस दौरान विशेषज्ञों ने कहा कि पहाड़ मानवता की जीवन रेखा हैं, इसलिए इनका संरक्षण करना पूरे विश्व समुदाय का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि पहाड़ पृथ्वी के 22 फीसदी क्षेत्र

में फैले हुए हैं और ये दुनिया की लगभग 50 फीसदी आबादी की आजीविका का सहारा हैं। नेपाल की राजधानी काठमांडू में आयोजित तीन दिवसीय सागरमाथा संवाद में शनिवार को विशेषज्ञों ने अपनी राय रखी। इस दौरान उन्होंने कहा कि पहाड़ मानवता की जीवन रेखा हैं। इसलिए, पहाड़ों का संरक्षण करना पूरे विश्व समुदाय का कर्तव्य है। अंतरराष्ट्रीय संवाद के दूसरे दिन विशेषज्ञों ने 'पहाड़ों में प्रकृति, संस्कृति और रोमांच की खोज' विषय पर एक पैनल चर्चा में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि पहाड़ों की पारिस्थितिकी का संरक्षण पर्यावरण के लिए जरूरी है। उन्होंने कहा कि हिमालय को संरक्षित करने के साथ ही संस्कृति, जीवन सैली, वन्यजीवन और जैव विविधता को भी बचाना होगा, ताकि पर्यटन और स्थानीय लोगों का जीवन बना रहे। पैनल चर्चा में भाग लेने वालों में विश्व वन्यजीव कोष, नेपाल के कंट्री डायरेक्टर घनश्याम गुरुंग, ऑक्सफैम के रिवर बेसिन मैनेजर राजन सुबेदी, युगांडा के जल एवं वन मंत्रालय के डिप्टी कमिश्नर मौरिन एनिनो, एवरेस्ट प्रदूषण नियंत्रण समिति के सीईओ छिरिंग शेरपा और प्रमुख पर्यावरणविद् अनिल चित्रकार शामिल थे। विशेषज्ञों के अनुसार, पहाड़ पृथ्वी के 22 फीसदी क्षेत्र में फैले हुए हैं। पर्वतीय क्षेत्र दुनिया की लगभग 50 फीसदी आबादी की आजीविका का सहारा हैं। उन्होंने कहा कि हिंदु कुश हिमालय क्षेत्र की अपनी अभूतपूर्व विविध संस्कृति है। यहां की भाषा, धर्म, जातीयता और पारंपरिक ज्ञान दुनिया से 70 मिलियन (सात करोड़) से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करता है। विशेषज्ञों ने कहा कि पर्वतीय क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए नई तकनीकों और निवेश की जरूरत है, ताकि यहां रहने वाले लोगों का भविष्य सुरक्षित हो सके।

गडकरी बोले- भारत में जैव ईंधन-हरित हाइड्रोजन, स्वच्छ ऊर्जा में मौके; प्रवासी भारतीयों को आमंत्रित किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन-राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भारत में जैव ईंधन, हरित हाइड्रोजन, स्वच्छ ऊर्जा, फ्लेक्स-फ्यूल मोबिलिटी में व्यापक निवेश पर जोर दिया। भारत को अवसरों की भूमि कहते हुए, गडकरी ने

वैश्विक भारतीय प्रवासियों को एक स्थायी और समृद्ध भविष्य के निर्माण में खोज, निवेश और भागीदारी के लिए भारत आमंत्रित किया। पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की प्रगति पर जोर देते हुए नितिन गडकरी ने पीएम गतिशक्ति, राष्ट्रीय रसद नीति, भारतमाला और सागरमाला जैसी प्रमुख पहलों पर प्रकाश डाला। वह होसे, ये ऐसे कार्यक्रम हैं जो एक एकीकृत और भविष्य के लिए तैयार परिवहन पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। ये न सिर्फ समावेशी विकास को बढ़ावा देते हैं बल्कि क्षेत्रीय संपर्क को भी मजबूत करते हैं।

मैक्सिको के सुरक्षा सलाहकार की गोली मारकर हत्या, अमेरिकी विदेशी मंत्रालय में भी कर चुके थे काम

मेक्सिको। मेक्सिको के सुरक्षा सलाहकार सेसर गुजमैन की गोली मारकर हत्या कर दी गई। यह हमला ग्वाडलहारा शहर में एक रेस्तरां में हुआ, जब वह दो अन्य प्रशिक्षकों के साथ खाना खा रहे थे। वह अमेरिकी विदेश मंत्रालय में भी काम कर चुके थे। मैक्सिको के सुरक्षा सलाहकार सेसर गुजमैन की गोली मारकर हत्या कर दी गई। उन पर एक रेस्तरां में हमला हुआ। बताया जा रहा है कि यह हमला किसी ड्रग माफिया ने प्लान करके किया। गुजमैन अमेरिकी विदेश मंत्रालय में अनुबंध पर भी काम कर चुके थे। घटना शुक्रवार की रात नौ बजे ग्वाडलजारा शहर में एक रेस्तरां में हुई, जब गुजमैन सुरक्षा और खुफिया प्रशिक्षण देने वाले दो अन्य लोगों के साथ खाना खा रहे थे। गुजमैन के साथ काम कर चुके एफबीआई के सेवानिवृत्त एजेंस आर्तुरो फोंटेस ने बताया कि उन्होंने हाल ही में जलिस्को पुलिस को सुरक्षा और गोपनीय जानकारी से जुड़ा प्रशिक्षण दिया था। फोंटेस ने लिंक्डइन पर एक पोस्ट में लिखा कि वह और गुजमैन पिछले दो वर्षों से अमेरिकी विदेश मंत्रालय की

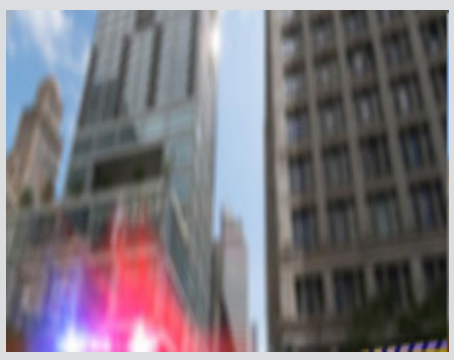

अंतरराष्ट्रीय नारकोटिक्स और कानून प्रवर्तन शाखा के तहत मैक्सिको की पुलिस को ड्रग विरोधी प्रशिक्षण दे रहे थे। हिदाल्गो राज्य के पूर्व सुरक्षा उप-सचिव कार्लोस अमाडोर की भी हमले में मौत हो गई। वहीं, तीसरे प्रशिक्षक पाब्लो काजिगाल गंभीर रूप से घायल हुए हैं। काजिगाल चिहुआहुआ राज्य के पूर्व रक्षा सचिव रह चुके हैं। फोंटेस ने कहा, वह सच्चे हीरो थे। जिन लोगों को मैं जानता हूं, उनमें वह सबसे बहादुर थे। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने एक हफ्ते पहले ही गुजमैन का 50वां जन्मदिन मनाया था। स्थानीय मीडिया की खबरों के मुताबिक, तीनों लोग एक गली में रेस्तरां में खाना खा रहे थे, तभी अज्ञात हमलावरों ने उन पर गोलीबारी की और फिर एक लाल रंग की कार से फरार हो गए। ग्वाडलहारा स्थित अमेरिकी वाणिज्य दूतावास ने कहा कि मृतक अभी उनके देश लिए काम नहीं कर रहे थे। वाणिज्य दूतावास ने सुरक्षा और गोपनीयता के कारणों से उनके पिछले संबंधों के बारे में अधिकारी जानकारी नहीं दी। वाणिज्य दूतावास ने कहा, हिंसा की किसी भी घटना से हम बेहद चिंतित हैं और पीड़ितों व उनके परिवारों के प्रति अपने संवेदना व्यक्त करते हैं।

ब्राजील में बर्ड फ्लू का प्रकोप, मैक्सिको, चिली और उरुग्वे ने पोल्ट्री आयात रोका

ब्राजील। ब्राजील में बर्ड फ्लू का प्रकोप बड़े पैमाने पर फैलने के बाद कई देशों ने वहां से पोल्ट्री आयात

रोक दिया है। ब्राजील दुनिया के सबसे बड़े पोल्ट्री उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है। अमेरिकी कृषि विभाग के अनुसार, ब्राजील दुनिया में चिकन मीट उत्पादन का 14ज़् हिस्सा अकेले करता है।ब्राजील में बर्ड फ्लू (पक्षियों में फैलने वाला एक संक्रामक रोग) के पहले बड़े मामले सामने आने के बाद कई देशों ने वहां से मुर्गी और अंडे जैसी पोल्ट्री वस्तुओं के आयात पर रोक लगा दी है। इनमें मैक्सिको, चिली और उरुग्वे जैसे लैटिन अमेरिकी देश शामिल हैं। इससे पहले चीन और यूरोपीय संघ (ईयू) ने भी ब्राजील से पोल्ट्री आयात को रोक दिया था।ब्राजील के कृषि और पशुपालन मंत्रालय ने शुक्रवार को जानकारी दी कि दक्षिणी राज्य रियो ग्रांडे डो सुल में एक वाणिज्यिक पोल्ट्री फार्म (जहां व्यापार के लिए मुर्गियां पाली जाती हैं) में बर्ड फ्लू के मामले की पुष्टि हुई है। यह पहला मौका है जब ब्राजील के किसी व्यावसायिक फार्म में बर्ड फ्लू मिला है। पहले केवल जंगली पक्षियों में इसके केस सामने आते थे।मैक्सिको ने अपने बयान में कहा कि एहतियात के तौर पर ब्राजील से चिकन मीट, अंडे देने वाले अंडे, जिंदा मुर्गियां और अन्य पोल्ट्री उत्पादों के आयात पर अस्थायी रोक लगाई जा रही है। वहीं ब्राजील के कृषि मंत्रालय के अधिकारी लुइस रुआ ने बताया कि चिली और उरुग्वे ने भी पोल्ट्री आयात रोकने का फैसला लिया है। पिछले कुछ महीनों में अमेरिका में बर्ड फ्लू के कारण अंडों की भारी कमी हो गई थी। इसके कारण ब्राजील से अमेरिका को अंडों का निर्यात 1,000ज़् से अधिक बढ़ गया है। यह बढ़ोतरी जनवरी से अप्रैल 2025 के बीच दर्ज की गई है। वहीं ब्राजील की सरकार ने बताया कि संक्रमित पोल्ट्री फार्म में तुरंत एक आपात योजना लागू की गई है। इसका उद्देश्य सिर्फ बीमारी को खत्म करना ही नहीं है, बल्कि पोल्ट्री उत्पादन को बनाए रखना और देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना भी है। सरकार ने विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन समेत स्वास्थ्य मंत्रालय, पर्यावरण मंत्रालय और अपने व्यापारिक साझेदार देशों को भी इसकी जानकारी दे दी है।

दोनों गुर्दे खराब...प्रत्यारोपण के बाद एवरेस्ट फतह कर रचा इतिहास, पिता ने दिया जीवनदान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पेम्बा शेरपा ने 8,848 मीटर ऊंचे एवरेस्ट की चोटी पर नेपाल के सरकारी स्वास्थ्य संस्थान, 'शहीद धर्मभक्त राष्ट्रीय प्रत्यारोपण केंद्र' और 'अंगदान

जीवनदान है, मृत्यु के बाद नष्ट होने वाले अंगों को दान करे' संदेश वाला बैनर फहराया। पेम्बा पिछले बुधवार सुबह 9.30 बजे एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचे। करीब एक महीने पहले उन्होंने बेस कैंप की ओर प्रस्थान किया था। गुर्दा प्रत्यारोपण करा चुके पेम्बा शेरपा ने दुनिया की सबसे ऊंची चोटी, माउन्ट एवरेस्ट (सागरमाथा) को सफलतापूर्वक फतह कर इतिहास रच दिया है। गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद एवरेस्ट फतह करने वाले वह न सिर्फ पहले नेपाली बल्कि विश्व के पहले व्यक्ति बन गए हैं।वह स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे अनेक लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बने हैं। पेम्बा ने 8,848 मीटर ऊंचे एवरेस्ट की चोटी पर नेपाल के सरकारी स्वास्थ्य संस्थान, 'शहीद धर्मभक्त राष्ट्रीय प्रत्यारोपण केंद्र' और 'अंगदान जीवनदान है, मृत्यु के बाद नष्ट होने वाले अंगों को दान करे' संदेश वाला बैनर फहराया। पेम्बा पिछले बुधवार सुबह 9.30 बजे एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचे। करीब एक महीने पहले उन्होंने बेस कैंप की ओर प्रस्थान किया था। उनके कैंपेन का प्रबंधन हाई माउन्टेन ट्रेक्स नामक कंपनी ने किया। पेम्बा ने मैं 14 मई को सुबह 9.30 बजे सागरमाथा की चोटी पर पहुंचा। मुझसे पहले किसी भी गुर्दा प्रत्यारोपित व्यक्ति ने ऐसा नहीं कया है। जापान में सात वर्ष तक काम करने वाले पेम्बा शेर्पा जब नेपाल लौटे, तो उन्हें गुर्दा संबंधी गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ा। दोनों गुर्दों ने काम करना बंद कर दिया, तब उनके पिता ने उन्हें अपना एक गुर्दा दान किया।

मार्को रुबियो ने रूसी समकक्ष से की बातचीत, युद्ध बंदियों के आदान-प्रदान पर सहमति का किया स्वागत

अमेरिका। अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने रूस के मंत्री सर्गेई लावरोव से फोन पर बात कर यूक्रेन-रूस वार्ता पर चर्चा की। इस बातचीत में मार्को रुबियो ने युद्ध

बंदियों के आदान-प्रदान पर सहमति का स्वागत करते हुए युद्ध विराम के लिए जारी प्रयासों में अमेरिका की समर्थन की तत्परता जताई। अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने शनिवार को रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव से फोन पर बात की, जिसमें शुक्रवार को इस्तांबुल में की गई यूक्रेन और रूस के प्रतिनिधिमंडल के बीच सीधे वार्ता के परिणामों पर चर्चा की गई। रूसी विदेश मंत्रालय ने बताया कि मार्को रुबियो ने युद्ध बंदियों के आदान-प्रदान पर सहमति का स्वागत करते हुए युद्ध विराम के लिए जारी प्रयासों में अमेरिका की समर्थन की तत्परता जताई। इसके बाद लावरोव ने रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष विराम को लेकर अमेरिका के प्रयासों की सराहना की। साथ ही कहा कि रूस भी अमेरिका के साथ इस संदर्भ में काम करने के लिए तैयार है।बता दें कि यह पहली बार है जब तीन वर्षों में रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष विराम को लेकर सीधी वार्ता हुई। इन वार्ताओं में, रूस और यूक्रेन ने 1,000 युद्ध बंदियों के आदान-प्रदान पर सहमति जताई। साथ ही संघर्ष विराम के लिए अपने-अपने प्रस्ताव तैयार करने की बात की। वहीं यूक्रेन ने राष्ट्रपति व्लोदिमीर जेलेस्की और राष्ट्रपति पुतिन के बीच सीधे बैठक की मांग भी की।वहीं इस मामले में क्रीमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने कहा कि एक बार सहमति बनने के बाद पुतिन और जेलेंस्की के बीच बैठक की संभावना से इंकार नहीं किया गया। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि दोनों देशों के बीच विचारधाराओं में बड़ा अंतर है और समाधान केवल तब संभव होगा जब पुतिन और ट्रंप के बीच बैठक हो, जिसके लिए गहन तैयारी की आवश्यकता होगी।अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि वह यूक्रेन युद्ध पर बात करने के लिए सोमवार को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से फोन पर बात करेंगे। ट्रंप ने शनिवार को सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि वह यूक्रेन में रक्तपात रोकने को लेकर पुतिन से बात करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि पुतिन से बात करने के बाद उनकी यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की और नाटो के सदस्यों से भी बात करने की योजना है। उन्होंने उम्मीद जताई कि बातचीत सार्थक होगी। गौरतलब है कि शुक्रवार को तीन साल में पहली बार रूस-यूक्रेन के बीच हुई शांति वार्ता बेनतीजा रही। तुर्किये के इस्तांबुल में हो रही वार्ता में यूक्रेन और रूस के प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। दो घंटे से भी कम समय तक चली बैठक में संघर्ष विराम पर कोई निर्णय नहीं लिया जा सका। हालांकि यूक्रेन के एक सूत्र ने रूस की मांगों को अवास्तविक और पहले से कहीं अधिक अस्वीकार्य करार दिया। रूस ने वार्ता पर संतुष्टि जताई और दोनों पक्षों ने 1,000 युद्धबंदियों की अदला-बदली पर सहमति जताई। हालांकि, जेलेंस्की ने चेतावनी दी कि यदि मॉस्को ट्रंप के 30-दिवसीय संघर्षविराम प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करता, तो पश्चिम को कठोर प्रतिबंध लगाने चाहिए। वार्ता समाप्त होते ही यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने ट्रंप और फ्रांस, जर्मनी व पोलैंड के नेताओं के साथ फोन पर चर्चा की।

पुतिन-जेलेंस्की से कल फोन पर बात करेंगे ट्रंप

अमेरिकी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सोमवार को व्लादिमीर पुतिन और वोलोदिमीर जेलेंस्की से फोन पर बात करेंगे। ट्रंप ने कहा है कि वह पहले पुतिन और बाद में जेलेंस्की से बात करेंगे। इस दौरान वह यूक्रेन में युद्धविराम के लिए दबाव डालेंगे। ट्रंप का कहना है कि पुतिन के साथ बातचीत यूक्रेन में रक्तपात को रोकने के बारे में होगी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सोमवार (स्थानीय समयानुसार) को यूक्रेन में युद्ध समाप्त करने के बारे में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से फोन पर बात करेंगे। इसके बाद, वह यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की और विभिन्न नाटो देशों के नेताओं से भी बात करेंगे। ट्रंप का कहना है कि पुतिन के साथ बातचीत यूक्रेन में रक्तपात को रोकने के बारे में होगी। राष्ट्रपति ट्रंप ने शनिवार (स्थानीय समयानुसार) को अपने सोशल प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट किया, जिसमें उन्होंने लिखा, 'उम्मीद है कि यह एक अच्छा दिन होगा, युद्धविराम होगा और यह बहुत ही हिंसक युद्ध, जो कभी नहीं होना चाहिए था, समाप्त होगा।' क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने ट्रंप से फोन पर बातचीत होने की पुष्टि की, जिसके लिए तैयारियां चल रही हैं।

पाम स्प्रिंग्स में क्लिनिक के पास कार विस्फोट, एक की मौत; एफबीआई ने घटनास्थल पर भेजे बम विशेषज्ञ

कैलिफोर्निया। पाम स्प्रिंग्स शहर में फर्टिलिटी क्लिनिक के पास धमाके में एक व्यक्ति की मौत हो गई और क्लिनिक को भारी नुकसान पहुंचा। एफबीआई ने इसे 'जानबूझकर किया गया आतंकी कृत्य' बताया है। घटना में चार लोग घायल हुए और जांच अभी जारी है।अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य के पाम स्प्रिंग्स शहर में शनिवार को एक फर्टिलिटी क्लिनिक के बाहर जोरदार धमाका हुआ। इसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई और क्लिनिक को गंभीर नुकसान पहुंचा। संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) ने इसे 'जानबूझकर किया गया आतंकवादी कृत्य' बताया है।एफबीआई लॉस एंजेलिस कार्यालय के प्रमुख अकील डेविस ने कहा कि क्लिनिक को जानबूझकर निशाना बनाया गया था, लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि अधिकारी इस नतीजे तक कैसे पहुंचे। मृतक की पहचान अभी नहीं हुई है। डेविस ने यह नहीं बताया कि मृतक ही संदिग्ध था या नहीं। हालांकि उन्होंने कहा कि फिलहाल किसी और संदिग्ध की तलाश नहीं की जा रही है।डेविस ने यह भी बताया कि इस धमाके में चार लोग घायल हुए हैं। हालांकि, उन्होंने यह नहीं बताया कि उन्हें आई चोटें कितनी गंभीर हैं। अधिकारियों को इस बात की भी जांच करनी है कि क्या इस धमाके का कहीं सीधा प्रसारण (इंटरनेट पर लाइवस्ट्रीम) किया गया था। एफबीआई ने घटनास्थल पर बम विशेषज्ञ और अन्य जांचकर्ता भेजे हैं।पाम स्प्रिंग्स पुलिस प्रमुख एंडी मिल्स ने बयान

में कहा कि यह धमाका जानबूझकर किया गया कृत्य लग रहा है। कई इमारतों को नुकसान पहुंचा है, जिनमें से कुछ बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई हैं। मिल्स ने कहा, एक व्यक्ति की मौत हुई है, लेकिन उसकी पहचान अभी तक नहीं हो पाई है।इस मामले से जुड़े दो अधिकारियों ने बताया कि धमाके को कार बम विस्फोट के रूप में देखा जा रहा है। एक अधिकारी ने बताया कि शुरुआती जांच में ऐसा माना जा रहा है कि जो व्यक्ति मरा है, वही धमाके के लिए जिम्मेदार हो सकता है। हालांकि जांच अभी शुरुआती दौर में है। अमेरिकी अटॉर्नी जनरल पाम बॉन्डी ने कहा कि संघीय एजेंसियां जांच कर रही हैं। उन्होंने कहा, ट्रंप प्रशासन महिलाओं और माताओं को अमेरिका की धड़कन मानता है। किसी फर्टिलिटी क्लिनिक पर हमला अक्षम्य है।एफबीआई ने सोशल मीडिया पर बताया कि जांचकर्ता, बम विशेषज्ञ और सबूत जुटाने वाली टीम घटनास्थल पर पहुंची है। इसके अलावा शराब, तंबाकू, हथियार और विस्फोटक मामलों की जांच करने वाला ब्यूरो (एटीएफ) भी मदद कर रहा है। पाम स्प्रिंग्स शहर ने बताया कि धमाका सुबह 11 बजे हुआ और लोगों से कहा गया कि वे नॉर्थ इंडियन कैन्यन ड्राइव और ईस्ट ताचेवाह ड्राइव के आसपास के इलाके से दूर रहें।अमेरिकन रिप्रोडक्टिव सेंटर फर्टिलिटी क्लिनिक के मालिक डॉ. महेर अब्दुल्ला ने बताया कि उनके क्लिनिक को नुकसान पहुंचा है। उन्होंने एसोसिएटेड प्रेस को फोन पर इंटरव्यू में बताया कि उनका पूरा स्टाफ सुरक्षित और सही सलामत है। विस्फोट से उस कार्यालय को नुकसान हुआ जहां मरीजों से बातचीत होती है, लेकिन आईवीएफ लैब और वहां रखे गए सभी भ्रूण सुरक्षित हैं। अब्दुल्ला ने कहा, मुझे नहीं पता कि क्या हुआ, शुक्र है कि आज कोई मरीज नहीं था। घटनास्थल से आई तस्वीरों में क्लिनिक के पास एक जलती हुई कार दिखाई दी। विस्फोट ने इमारत की छत को ढहा दिया और सड़क के दूसरी तरफ मलबा फैला दिया।पास के एक स्काईलार्ट होटल में काम करने वाले राइनो विलियम्स (47 वर्षीय) ग्राहकों से बातचीत कर रहे थे। विस्फोट की तुरंत बाद वह घटनास्थल की ओर दौड़ते हुए दिखाई दिए। उन्होंने धुएं का गुबार उठते हुए देखा और जलते हुए हुए प्लास्टिक और रबर की गंध महसूस की। उन्होंने देखा कि एक इमारत का हिस्सा उड़कर सड़क तक आ गया था और चारों तरफ मलबा फैला हुआ था। निमा तब्रिजी (37 वर्षीय) पास की एक कैनबिस डिस्पेंसरी में थे।

बॉलीवुड/टैली मसाला

मिशन इंपॉसिबल 8' की धमाकेदार शुरुआत' फाइनल डेस्टिनेशन' और 'रेड 2' का कलेक्शन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारतीय सिनेमाघरों में इस समय हॉलीवुड की दो फिल्में चल रही हैं। 'फाइनल डेस्टिनेशन ब्लड लाइन्स' का सामना टॉम क्रूज की 'मिशन इंपॉसिबल : द फाइनल रेकनिंग' से है। जानते हैं इन फिल्मों ने शनिवार को कितना कलेक्शन किया। हॉलीवुड अभिनेता टॉम क्रूज की फिल्म 'मिशन इंपॉसिबल : द फाइनल रेकनिंग' ने भारतीय सिनेमाघरों में शानदार कमाई के साथ अपनी शुरुआत की है। भारत में पहले दिन सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों की टॉप 10 लिस्ट में इसने जगह बना ली है। वहीं, 'फाइनल डेस्टिनेशन' के कलेक्शन में वीकएंड में बढ़त हुई। अजय देवगन की फिल्म 'रेड 2' भी धीमी रफ्तार के साथ आगे बढ़ रही है। जानते हैं इन फिल्मों ने वीकएंड पर कितना कलेक्शन कियाष्टटॉम क्रूज की फिल्म 'मिशन इंपॉसिबल : द फाइनल रेकनिंग' ने भारतीय बॉक्स ऑफिस पर एक शानदार शुरुआत की है। फिल्म ने पहले दिन ही 17.50 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। फिल्म को अमेरिका से छह दिन पहले भारत में रिलीज किया गया। निर्माताओं को संभवतः भारतीय दर्शकों से काफी उम्मीद रही होगी। फिल्म का प्रदर्शन भी उनकी उम्मीद के मुताबिक ही होता दिख रहा है। 15 मई को भारतीय सिनेमाघरों में रिलीज हुई हॉलीवुड फिल्म 'फाइनल डेस्टिनेशन ब्लड लाइन्स' की कमाई में भी वीकएंड पर बढ़त देखी गई। फिल्म ने पहले दिन 4.5 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया। दूसरे दिन भी इसकी कमाई में बढ़त आई और शनिवार को इसने 6.25 करोड़ रुपये का कारोबार भारतीय बॉक्स ऑफिस पर किया। फिल्म के कुल कलेक्शन की बात करें तो इसने अब तक 16.10 करोड़ रुपये की कमाई की है।अजय देवगन की फिल्म 'रेड 2' को रिलीज हुए 17 दिन हो गए है। फिल्म धीमी गति के साथ बॉक्स ऑफिस पर कमाई कर रही है। टॉम क्रूज की 'मिशन इंपॉसिबल 8' के रिलीज होने के बाद भी फिल्म की कमाई पर कोई खास असर पड़ता नहीं दिख रहा है। शनिवार को फिल्म ने चार करोड़ रुपये का कलेक्शन किया। लगभग 50 करोड़ रुपये के बजट में बनी फिल्म 'रेड 2' ने अब तक 143.35 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। फिल्म अजय देवगन अपनी भूमिका दोहराते हुए नजर आए हैं। वहीं, रितेश देशमुख ने फिल्म में खलनायक की भूमिका अदा की है। इसके अलावा फिल्म में वाणी कपूर, सौरभ शुक्ला, अमित सियाल जैसे कलाकार भी शामिल हैं।

खुद को जिहादी कहे जाने पर बोले जावेद अख्तर 'नर्क में चला जाऊंगा पर पाकिस्तान नहीं'

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। मशहूर गीतकार जावेद अख्तर ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद तीखा पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग कहते कि वो जिहादी हैं, पाकिस्तान चले जाएं। जानिए उन्होंने क्या कहा।गीतकार और लेखर जावेद अख्तर अपने बेबाक अंदाज के लिए जाने जाते हैं। अब गीतकार ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद पाकिस्तान पर जोरदार हमला किया है। इस बयान से जावेद एक बार फिर से मीडिया में चर्चा का विषय बन गए हैं। उन्होंने कहा कि बहुत से लोग उन्हें गालियां देते हैं और पाकिस्तान चले जाने के लिए बोलते हैं। इस पर लेखक ने करारा जवाब दिया है।लेखक और गीतकार जावेद अख्तर हाल ही में मुंबई में राजनेता संजय राउत की किताब 'हेवन इन हेल' के विमोचन कार्यक्रम में पहुंचे थे। उस कार्यक्रम के दौरान गीतकार ने एएनआई से बातचीत में कहा, 'मेरे ट्वीट को देखिए, इसमें

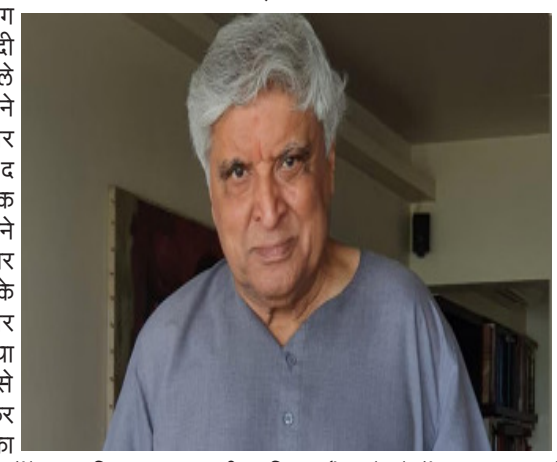

बहुत सारी गालियां हैं, मुझे दोनों तरफ से गालियां आती हैं, बहुत से लोग मेरी तारीफ करते हैं, लेकिन यह सच है कि दोनों तरफ के लोग मुझे गाली देते हैं। इधर का कट्टरपंथी भी गाली देता है और उधर का भी। यह हकीकत है। अगर उनमें से कोई भी गाली देना बंद कर दे, तो मुझे चिंता होगी कि मैं क्या गलती कर रहा हूं।'आगे बातचीत में जावेद अख्तर ने अपने बेबाक अंदाज में कहा, 'एक तरफ कुछ लोग कहते हैं कि तुम काफिर हो और नर्क में चले जाओ। वहीं, दूसरी तरफ कहते हैं कि तुम जिहादी हो और पाकिस्तान चले जाओ। 'अगर मुझे पाकिस्तान या नर्क में से कोई एक चुनने का मौका मिले, तो मैं नर्क जाना पसंद करूंगा।' जावेद अख्तर सिर्फ हिन्दी फिल्मों के गीतकार और पटकथा लेखक ही नहीं, बल्कि वह एक कवि भी हैं। उन्होंने 'सीता और गीता', 'जंजीर', 'दीवार' और 'शोले' जैसी शानदार फिल्मों के स्क्रिप्ट और डायलॉग्स लिखे हैं। इसके अलावा उन्होने 'तेजाब', '1942: अ लव स्टोरी', 'बॉर्डर' जैसी जबरदस्त फिल्मों के लिए गीत भी लिखे हैं।

'मिशन इंपॉसिबल 8' की स्क्रीनिंग पर लंदन पहुंची अवनीत कौर, दिखाए हुस्न के जल्वे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। अवनीत कौर हॉलीवुड फिल्म 'मिशन इंपॉसिबल 8' की स्क्रीनिंग पर लंदन पहुंची हैं। यहां से उन्होंने अपनी खूबसूरत तस्वीरें शेयर की हैं।बॉलीवुड अभिनेत्री अवनीत कौर हाल ही में लंदन में टॉम क्रूज की फिल्म 'मिशन इम्पॉसिबल- द फाइनल रेकनिंग' के प्रीमियर में शामिल हुईं। इसके बाद अभिनेत्री ने अपने इंस्टाग्राम पर रेड कार्पेट से अपनी खूबसूरत तस्वीरें शेयर कीं हैं। अवनीत के फैंस ने भारतीय टेलीविजन से लेकर हॉलीवुड पहुंचने तक उनके सफर की तारीफ की है। फिल्म के प्रीमियर के दौरान अवनीत कौर ने गोल्डन ड्रेस पहनी हुई थी, जो उन पर काफी जच रही थी। तस्वीरों को शेयर करते हुए अवनीत ने लिखा 'लंदन में मिशन इम्पॉसिबल द फाइनल रेकनिंग के प्रीमियर के रेड कार्पेट पर।'हाल ही में हॉलीवुड सुपरस्टार टॉम क्रूज और अवनीत कौर का एक वीडियो इंस्टाग्राम पर वायरल हुआ। वीडियो में टॉम क्रूज ने भारत की तारीफ की। टॉम ने अवनीत से हिंदी भी सीखी। टॉम क्रूज ने भारत की तारीफ की और भारतीय फिल्म उद्योग में काम करने की इच्छा जाहिर की। उन्हें फिल्म से अपने संवाद को हिंदी में दोहराते हुए भी सुना गया।अवनीत कौर ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया जिसमें टॉम क्रूज को ये कहते हुए सुना जा सकता है 'हैलो इंडिया। मैं तुमसे प्यार करता हूं!' फिर अवनीत ने उन्हें हिंदी में एक मुहावरा सिखाया। इसे दोहराते हुए क्रूज ने कहा 'मैं आप सबसे बहुत प्यार करता हूं।' दूसरे वीडियो में वह हिंदी में अपने मशहूर संवाद को दोहराते हुए भी नजर आए। उन्होंने कहा 'मुझ पर भरोसा करो, एक आखिरी बार।' आपको बता दें टॉम क्रूज की एक्शन से भरपूर फिल्म 'मिशन इम्पॉसिबल- द फाइनल रेकनिंग' अमेरिका से लगभग एक हफ्ते पहले भारत में रिलीज हो गई है। फिल्म को भारत में खूब प्यार मिल रहा है। पहले ही दिन टॉम क्रूज की फिल्म 'मिशन इम्पॉसिबल- द फाइनल रेकनिंग' ने भारत में लगभग 17.50 करोड़ की कमाई कर ली।

टीवी शो 'हैरी पॉटर' के सेट पर पानी की तरह बहाया जा रहा पैसा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। हॉलीवुड की पॉपुलर सीरीज 'हैरी पॉटर' अब टीवी सीरीज के तौर पर दर्शकों को फिर से एंटरटेन करने के लिए आ रही है। इस सीरीज के मुख्य किरदारों के लिए तीन नए चेहरों को फाइनल किया गया है।'हैरी पॉटर' की जादुई दुनिया तो आपको याद ही होगी। इस सुपरनैचुरल सीरीज ने कहीं ना कहीं हम सभी के बचपन में रंग भरे हैं। अब हॉलीवुड की ये पॉपुलर सीरीज एक बार फिर से टीवी शो के रूप में वापसी कर रही है। 'वॉर्नर ब्रोज' इस टीवी शो को लेकर आ रहा है जिसके लिए फैंस काफी एक्साइटेड हैं।एचबीओ द्वारा बनाई जा रही इस नई टीवी सीरीज के लिए तीन बाल कलाकारों को ढूंढा जा चुका है, जो हैरी पॉटर, हर्माइनी ग्रेंजर और रॉन वीस्ली की भूमिकाओं में नजर आएंगे। इसके लिए करीब 32000 ऑडिशन्स हुए हैं जिसके बाद तीन बच्चों को चुना गया है। फिलहाल इन तीनों ही बच्चों के चेहरों को रिवील नहीं किया गया है और ना ही इनके बारे में कोई जानकारी दी गई है लेकिन एक बात तो तय है 'हैरी पॉटर' से जुड़ने जा रहे यह तीनों बच्चें रातों-रात स्टार जरूर बनने वाले हैं। इस टीवी सीरीज को सात सीजन में दिखाया जाएगा। हर एक सीजन की कहानी किताब पर ही आधारित होगी। वॉर्नर ब्रोज ने इस सीरीज को बनाने के लिए भव्य सेट तैयार किया है जिसे बनाने में करीब 1 बिलियन यूरो (9,539 करोड़ रुपये) लगे हैं। यह सेट वार्नर ब्रोज के लीव्सडेन स्टूडियो में स्थित है, जिसमें नए सड़कों, पार्किंग और बच्चों के लिए एक स्कूल जैसी सुविधाएं शामिल हैं। इसके अलावा जीवों के लिए भी खास स्थान तैयार किया गया है।

इरफान के बेटे बाबिल ने लिया फिल्मों से ब्रेक, मां सुतापा ने जताई खुशी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। इरफान खान के बेटे बाबिल खान ने फिल्मों से ब्रेक की घोषणा कर दी है। मामले पर अमर उजाला ने उनकी मां सुतापा सिकदर से एक्सक्लूसिव बातचीत कीष्ठ इरफान खान के बेटे और बॉलीवुड एक्टर बाबिल खान ने फिल्मों से ब्रेक की अनाउंसमेंट की है। बाबिल ने शनिवार शाम एक इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए इस बात की जानकारी दी। बाबिल के इस ब्रेक की अनाउंसमेंट पर अमर उजाला ने उनकी मां सुतापा सिकदर से एक्सक्लूसिव बात की। सुतापा ने कहा, 'हर मां चाहती है कि उसका बच्चा खुश रहे... मेरा भी बस यही ख्वाब है। मेरा मानना है कि हर बच्चा एक अच्छा ब्रेक डिजर्व करता है। मैं चाहती हूं कि मेरा बेटा एक खूबसूरत हॉलीडे पर जाए, खुद के लिए थोड़ा वक्त निकाले। हम विदेश जा रहे हैं छुट्टियों पर...और वो पूरी तरह से ये सुकून डिजर्व करता है।'सुतापा ने आगे कहा, 'जहां तक उसके फैसलों की बात है... क्या मैं खुश हूं? पता नहीं, रिएक्शन क्या होना चाहिए... लेकिन इतना जरूर कहूंगी कि अगर कुछ उसके लिए काम नहीं आया या चीजें उल्टी पड़ गईं, तो भी शायद वो ही बेहतर था। अब वो खुद को थोड़ा वक्त दे सकता है, ब्रेक ले सकता है... और सबसे ज़रूरी बात - अपने आप का ख्याल रख सकता है। एक मां के लिए इससे बड़ी राहत क्या होगी?' इससे पहले बाबिल ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर किया था। इसमें उन्होंने लिखा, 'बहुत हिम्मत, जुनून और आपसी सम्मान के साथ, साई राजेश सर और मैंने.. दोनों एक साथ इस जादुई सफर पर साथ आए। दुर्भाग्य से, अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण चीजें आगे नहीं बढ़ पाई, जैसा कि सभी ने योजना बनाई थी। चूंकि, मैं कुछ समय के लिए ब्रेक ले रहा हूं, इसलिए मैं साई राजेश सर और फिल्म की टीम को उनके भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं। मुझे पता है कि हमारे बीच बहुत प्यार है और हम भविष्य में जल्द ही मिलेंगे और एक साथ कुछ जादुई करेंगे।' हाल ही में बाबिल खान का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसे लेकर दावा किया जा रहा था कि इसे खुद बाबिल ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया था और फिर इसे डिलीट कर दिया। इस वीडियो में बाबिल ने अनन्या पांडे और अर्जुन कपूर समेत कई बॉलीवुड एक्टर्स को फेक बताया था। मामले पर जब विवाद बढ़ा तो उनकी मां सुतापा को इस पर सफाई देनी पडी थी। उन्होंने कहा था, 'पिछले कुछ वर्षों में बाबिल ने अपनी एक्टिंग और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में खुलकर बात करने के लिए खूब प्यार और सम्मान पाया है। हर इंसान की तरह बाबिल के लिए भी कुछ दिन मुश्किल हो सकते हैं। बाबिल को भी मुश्किल दिनों से गुजरना पड़ता है और यह उनमें से एक था। हम उनके सभी शुभचिंतकों को भरोसा दिलाना चाहते हैं कि बाबिल पूरी तरह सुरक्षित हैं और जल्द ही बेहतर महसूस करेंगे।' उनकी टीम ने कहा था कि वीडियो का गलत मतलब निकाला गया था। वर्क फ्रंट की बात करें तो बाबिल ने अपने करियर की शुरुआत पिता इरफान खान की फिल्म 'करीब करीब सिंगल' से बतौर कैमरा असिस्टेंट की थी। इसके बाद उन्होंने 'कला' से बतौर एक्टर तृप्ति डिमरी के अपोजिट एक्टिंग डेब्यू किया था। बाबिल 'फ्राइडे नाइट प्लान' और 'द रेलवे मैन' में भी नजर आ चुके हैं। हाल ही में उनकी फिल्म 'लॉगआउट' ओटीटी पर रिलीज हुई है।

अनुपम खेर ने दिखाई फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' की स्टारकास्ट, लिखा- बाकी लोग हमारे साथ हैं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। अभिनेता अनुपम खेर ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट की है। इस पोस्ट में उन्होंने अपनी फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' की स्टारकास्ट को दिखाया है। आप भी देखें।अभिनेता अनुपम खेर अपनी आने वाली फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' को लेकर उत्साहित हैं। कान फिल्म फेस्टिवल में उनकी फिल्म का वर्ल्ड प्रीमियर हुआ। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर अनुपम खेर ने एक पोस्ट साझा की है। पोस्ट में एक वीडियो है। इस वीडियो में वह लोग नजर आ रहे हैं जिन लोगों ने फिल्म में अभिनय किया है।अनुपम खेर ने सोशल मीडिया पर जो वीडियो शेयर की है उसमें देखा जा सकता है कि वह खुद, शुभांगी दत्त, बोमन ईरानी, करण टैकर और पल्लवी जोशी नजर आ रही है। वीडियो के कैप्शन में अनुपम खेर ने लिखा है 'बाकी लोगों को हमने मिस कर दिया है। कान फिल्म फेस्टिवल में 'तन्वी द ग्रेट'। हम जानते हैं कि आप हमारे साथ हैं। हम उन्हें जल्द ही स्क्रीन पर देखेंगे। जय हो।'इससे पहले अनुपम खेर ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर करते हुए कहा था 'आज 17 मई है। आज शाम कान फिल्म फेस्टिवल में मेरी फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' का वर्ल्ड प्रीमियर है। इस फिल्म की कहानी आपको पता लगेगी। मैंने सोचा कि मैं वह कहानी बनाऊं जिसे पहले मैं महसूस करूं। आज के दौर में दिल से निकली हुई फिल्म बनाना बहुत मुश्किल है।इस वीडियो के कैप्शन में अभिनेता ने लिखा था 'तन्वी द ग्रेट तूफानों के बारे में नहीं है। यह उनसे पार पाने के बारे में है। यह किसी और को अपनी परेशानी से प्रभावित न होने देने के बारे में है।

'जवान' और 'पठान' से पहले शाहरुख ने ली थी वास्तु टिप्स, निर्माता आनंद पंडित ने किया खुलासा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। फिल्म निर्माता आनंद पंडित ने एक इंटरव्यू में बताया है कि शाहरुख खान की पिछले साल जो फिल्में चलीं उसकी एक खास वजह थी। आइए इसके बारे में जानते हैं।बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान ने 2024 में अपनी फिल्मों 'पठान' और 'जवान' के साथ बड़े पर्दे पर धमाकेदार वापसी की। इन फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस के रिकॉर्ड तोड़ दिए और बॉलीवुड की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्में बनीं। पठान ने 1055 करोड़ तो जवान ने 1148.32 करोड़ का कारोबार किया था। इन फिल्मों के चलने की पीछे एक वजह थी। आइए जानते हैं।बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान ने 2024 में अपनी फिल्मों 'पठान' और 'जवान' के साथ बड़े पर्दे पर धमाकेदार वापसी की। इन फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस के रिकॉर्ड तोड़ दिए और बॉलीवुड की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्में बनीं। पठान ने 1055 करोड़ तो जवान ने 1148.32 करोड़ का कारोबार किया था। इन फिल्मों के चलने की पीछे एक वजह थी। आइए जानते हैं।आनंद पंडित ने कहा 'जब हम करीब आ गए, तो मैंने उनका मार्गदर्शन करना शुरू कर दिया। ऊर्जा पर आधारित एक विशेष वास्तु शास्त्र है, जिसका मैं अभ्यास करता हूं। हमने उनके घर पर जरूरी ऊर्जा को समायोजित किया। यह उनके लिए कारगर रहा। वह इतने विनम्र और महान व्यक्ति हैं कि उन्होंने सार्वजनिक रूप से इसे स्वीकार किया। मैं इसके लिए आभारी हूं।'साल 2023 में शाहरुख खान, आनंद पंडित के 60वें बर्थडे पार्टी में शामिल हुए। शाहरुख खान ने उनके साथ अपने रिश्ते के बारे में बात की। शाहरुख ने कहा 'उनके साथ मेरा अंतिम रिश्ता यह है कि वे मेरे आध्यात्मिक गुरु हैं। चूंकि वे एक डेवलपर हैं इसलिए वे वास्तु को अच्छी तरह से जानते हैं। मैं कभी-कभी उन्हें घर बुलाता हूं और उनसे कहता हूं 'सर, मेरी पिछली फिल्म नहीं चली, कृपया कुछ कर दो।' आनंद सर एक दर्पण लगाने का सुझाव देते थे। सौभाग्य से मेरी फिल्में चल रही हैं।'आपको बता दें आनंद एक भारतीय फिल्म निर्माता हैं। वह आनंद पंडित मोशन पिक्चर्स के मालिक हैं। उनके फिल्म स्टूडियो ने 'टोटल धमाल', 'मिसिंग', 'सरकार 3' और 'ग्रेट ग्रैंड मस्ती' जैसी बॉलीवुड फिल्मों का निर्माण किया है। उन्होंने थैंक गॉड, द बिग बुल और चेहरे सहित कई अन्य फिल्मों का भी निर्माण किया है। आनंद एक रियल एस्टेट डेवलपर और लोटस डेवलपर्स के संस्थापक भी हैं।

कमल हासन की फिल्म 'ठग लाइफ' का ट्रेलर रिलीज

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। कमल हासन की फिल्म 'ठग लाइफ' का ट्रेलर रिलीज हो गया है। इस फिल्म के ट्रेलर को देखने के बाद यूज़र्स के अलग-अलग रिएक्शन्स देखने को मिल रहे हैं। साउथ एक्टर कमल हासन की मच अवेटेड फिल्म 'ठग लाइफ' का ट्रेलर रिलीज हो चुका है। 2 मिनट के इस ट्रेलर में दिग्गज अभिनेता का दमदार एक्शन फैंस का ध्यान खींच रहा है। ट्रेलर में इमोशन्स, ड्रामा और धुंआधार एक्शन देखने को मिल रहा है। मणि रत्नम की फिल्म 'ठग लाइफ' के ट्रेलर में सबसे पहले कमल हासन को दिखाया जाता है। राजधानी दिल्ली के बैकग्राउंड में कहानी को दिखाया जा रहा है। ट्रेलर में सबसे पहले एक बच्चे से कमल हासन कहते हैं- 'जान तूने ही बचाई है मेरी, यमराज के चंगुल से बाहर निकाल लाया है मुझे।इसके बाद वो बच्चे से कहते हैं कि अब से तू और मैं आखिरी तक एक साथ रहेंगे। इसके बाद दिखाया गया है कि वो बच्चा जिसका नाम अमर है, अब बड़ा हो चुका है और कमल हासन के साथ उसका बॉन्ड और रिश्ता ही पूरी फिल्म की नींव के तौर पर नजर आ रहा है। हालांकि आगे जाकर यही रिश्ता फिल्म की कहानी में बदलाव लेकर आएगा। फिल्म के ट्रेलर में वैसे तो कमल हासन ही पूरी तरह से छाए हुए हैं। लेकिन उनके अलावा अमर नाम के किरदार में एक्टर सिलाम्बरासन भी नजर आ रहे हैं। वहीं तृषा कृष्णन भी ट्रेलर में काफी इंप्रेस कर रही हैं।

स्वात्वाधिसकसार एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सस्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0-09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोट- इस समाचार पत्र मे प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हंतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।